सर्वेक्षण परिवार

सत्यमेव जयते
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
आसेतु हिमाचलम
1767

वर्ष—2017
अंक—द्वितीय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

সর্বেক্ষন পরিবার

સર્વેક્ષણ પરિવાર

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സരോഷ പരിവാർ

सर्व्हेक्षण परीवार

ସର୍ଭେକ୍ଷଣ ପରିବାର

ਸਰਵੇਕ੍ਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

सर्वेक्षण् परिवारम्

سارپیکسهان پارگصار

சர்வேக்ஷன் பரிவார்

సర్వేక్షన్ పరివార్

سروکشن پریوار

Sarvekshan Pariwar

सर्वेक्षण परिवार

अंक – द्वितीय **वर्ष – 2017**

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ
250 बसंत के पार हुआ
भारत का पठारी प्रदेश या फिर हो हिमालय पहाड़
गंगा का मैदान या फिर विशाल मरुभूमि थार
तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे
हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे
विविधताओं से भरा हमारा देश
सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं 'शुभेश'
फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण
भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण
राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा **'सर्वेक्षण परिवार'**
पत्रिका का द्वितीय अंक प्रस्तुत है आपको साभार

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

यह पत्रिका विभागीय वेबसाईट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है।

सर्वेक्षण परिवार

अंक – द्वितीय वर्ष – 2017

संरक्षण व सम्पादन

श्री संजय कुमार

अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

पेपर सेटिंग

श्री भरत कुम्भार

अधीक्षक सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

साज–सज्जा, पत्रिका की डिजाईन व टंकण

श्री शुभेश कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मुद्रण

पश्चिमी मुद्रण वर्ग, नई दिल्ली

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों की व्यक्तिगत सोच है, कार्यालय प्रबंधन की भी यही सोच हो यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

अनुक्रमणिका

काव्य रचना

भारतीय सर्वेक्षण विभाग	-	शुभेश कुमार	-	13
अंग्रेजी का बुखार	-	अनुपम बैरागी	-	14
देश का विकास	-	शुभेश कुमार	-	15
समन्दर और पत्थर	-	शुभेश कुमार	-	28
देशभक्ति बनाम अभिव्यक्ति	-	सीमा मित्रा	-	29
बारिशों का शहर	-	सुपर्णा राय	-	37
सरकारी बनाम निजी प्रतिष्ठान	-	शुभेश कुमार	-	38
जलियांवाला बाग में बसंत	-	सीमा मित्रा (प्रस्तुति)	-	41
यूं ही सफर में	-	शुभेश कुमार	-	44
आदमी का आकाश	-	कृष्ण कुमार शर्मा(प्रस्तुति)		49
ऐ मातृभूमि तेरी जय हो	-	उमेश रविदास (प्रस्तुति)		50
साथ रहो	-	शांति दास	-	58
यात्रा	-	सोहम मण्डल	-	59

संस्मरण/एकांकी

मेरा पहला फील्ड	-	रुप कुमार दास	-	25
एक मुलाकात	-	सिबेन्दु चक्रवर्ती	-	51
यादें	-	देबेश रॉय	-	63

कहानी लेखन

अनोखा मन्दिर	-	अनुपम बैरागी	-	23
पुत्र की समझदारी	-	काली प्रसाद मिश्रा	-	40
बालक की विद्वता	-	रतन दे सरकार	-	43

आलेख

नक्शे पोर्टल डिजिटल इण्डिया की ओर बढ़ते कदम	-	कृष्ण कुमार शर्मा	-	17
जीवन	-	ओमप्रकाश रॉय	-	19
हिन्दी - भारत की अखण्डता का प्रतीक	-	शुभेश कुमार	-	20
रथयात्रा	-	कृष्ण चन्द्र दास	-	32
सरकारी तंत्र को कैसे मजबूत बनाएं	-	बिष्णु रंजन चक्रवर्ती	-	35
मुद्रण	-	पी. कुमार	-	54
हिन्दी- कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	-	राजा सरकार	-	55
शंख	-	अरिन कुमार दत्ता	-	60
संकल्प	-	देवनारायण सिंह	-	61
सीख	-	सजल कुमार घोष	-	62

अध्यात्म-चिंतन

मेरे राम	-	शुभेश कुमार	-	36
प्रार्थना	-	नब कुमार पाल	-	45
शान्ति कहां से मिलेगी	-	रमनी रंजन दास	-	57

पुरस्कृत निबन्ध

अनुशासन	-	नवनीत लाल कंचन	-	30
स्वच्छता का महत्व	-	बिश्वनाथ नाग	-	39

बाल-मन

उठ जाग री मेरी गुडिया	-	शुभेश कुमार	-	34
भारत और उसके राष्ट्रीय प्रतीक(पेंटिंग)	-	शुचि दास	-	46
चित्रांकन	-	शुचि दास	-	47

हास्य-रस

तन्द्रा-भंग	-	शुभेश कुमार	-	42
गुदगुदी	-	सीमा मित्रा	-	22, 27

फोटो-गैलरी

मेजर जनरल वी.पी. श्रीवास्तव
Maj Gen V. P. Shrivastava

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं. 37
देहरादून-248001(उत्तराखण्ड), भारत

Survey of India
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001 (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र, पूर्वी मुद्रण वर्ग एवं अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र, संयुक्त रूप में कोलकाता से राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने जा रहे हैं।

राजभाषा हिन्दी एक ऐसी सशक्त और लोकप्रिय भाषा है जो देश के कोने-कोने में बोली व समझी जाती है। आवश्यकता इस भाषा के प्रयोग को बढ़ाने की है। इस दिशा में कोलकाता में स्थित कार्यालयों के लिए यह आपका सराहनीय प्रयास है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हर उस व्यक्तियों जिनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, उन्हें बधाई देता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(वी.पी. श्रीवास्तव)
मेजर जनरल
भारत के महासर्वेक्षक

Fax : 00-91-135-2744268/2743331
Tel : 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn. 4350
E-mail: sgi.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

संजय कुमार
Sanjay Kumar

अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र
Addl. Surveyor General, Eastern Zone

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
Office of the Addl. Surveyor General
पूर्वी क्षेत्र Eastern Zone
15, वुड स्ट्रीट 15, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

मित्रों, जरा सोचें यूरोप-मध्य एशिया- भारतीय प्रायद्वीप- तिब्बत-चीन से गुजरने वाले रेशम-मार्गों पर वाणिज्य-व्यापार कैसे सदियों तक फलता-फूलता रहा, जबकि मार्ग या उसके आस-पास के देशों में परस्पर भाषायी समानता नहीं थी। अगर इस पुरानी बात को छोड़ भी दें, आज भाषायी असमानता के बावजूद हमारे देश में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक व्यापार सुगमता से चल रहा है। क्या आप में से किसी ने, किसी व्यापारी या ट्रक-चालक से यह सुना कि उन्हें भाषायी दिक्कतों के कारण काम-काज को निपटाने में तकलीफ होती है। न ही ऐसा सुना गया कि भाषायी कारणों से राजमार्गों पर ढाबे बन्द हो गये हों या किसी ट्रक चालक ने अपना व्यवसाय बदलना चाहा हो। न ही किसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को आजादी की अलख जलाने के लिए या इसे वृहत-स्वरुप प्रदान करने के लिए उन्हें भाषायी बाधा महसूस हुई, जबकि वे मिश्रित भाषा-भाषी थे।

वस्तुत: जापान से दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों तक में रह रहे प्रवासी भारतीय को एक-सूत्र में रखकर 'आजाद हिन्द फौज' का निर्माण सम्भव हो सका तो केवल इसलिए कि हमारे बीच में एक सुगम सम्पर्क भाषा हिन्दी मौजूद रही है, जिसे सबने गले लगाया। कारण, हिन्दी में यह विलक्षण क्षमता है कि वह आसानी से समझ में आ जाती है, जो हर प्रकार के हाव-भाव, परिस्थिति, मानवीय उद् गारों और ध्वनियों को प्रकट करने के लिए शब्दावलियों से परिपूर्ण है। जैसा कान में सुनाई देता है, वैसा ही शब्दों में उतारा जा सकता है और पुन: वापस वैसा ही बोला जा सकता है, जैसा मूलत: सुना गया था।

अंग्रेजी या अन्य यूरोपीय भाषा की इस अपंगता से आप सभी परिचित हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह कि इसे कभी अहिन्दी-भाषी क्षेत्र पर थोपा नहीं गया या किसी द्रविड़/आर्य मूल की भाषाओं पर इसे तरजीह नहीं दी गयी। वास्तव में इसे भारतीयों ने स्वमेव आत्मसात किया

है। विभागीय काम-काज में राज-भाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी के प्रोत्साहन का भी यही उद्येश्य है कि सम्पर्क भाषा हिन्दी पूरे भारतवर्ष में लोगों को सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से जोड़ने में अपनी भूमिका बखूबी निभाती रहे।

इसी पृष्ठभूमि में भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कोलकाता शहर के कार्यालयों के कर्मियों, जोकि अधिकांशत: बांग्ला-भाषी हैं की ओर से पत्रिका 'सर्वेक्षण-परिवार' के दूसरे वार्षिक अंक को जारी करना राजभाषा हिन्दी के प्रति बांग्ला-भाषियों के अगाध प्रेम और उत्साह को प्रदर्शित करता है। आशा है पत्रिका के लेख आपको रोचक और ज्ञानवर्धक लगेंगे।

(संजय कुमार)
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र कार्यालय
एवम्
निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

निज भाषा उन्नति अहै,
सब भाषा को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के ,
मिटै न हिय को शूल ।।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रान्तीय ईर्ष्या– द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।
- सुभाष चन्द्र बोस

आशीष कौशल
निदेशक
ASHISH KAUSHAL
DIRECTOR

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पूर्वी मुद्रण वर्ग
14, वुड स्ट्रीट
कोलकाता-700016 (पं०बं०)
SURVEY OF INDIA
EASTERN PRINTING GROUP,
14 WOOD STREET,
KOLKATA-700016 (W.B)

<u>सन्देश</u>

प्रिय साथियों,

यह गौरव एवं प्रसन्नता का क्षण है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता के पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू ० स्था ० आकंडा केंद्र एवं पूर्वी मुद्रण वर्ग के परस्पर सामूहिक प्रयास से गृह पत्रिका “ सर्वेक्षण परिवार “ के दूसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है. यह सर्वविदित है कि राजभाषा हिंदी सरल, सुबोध व समृध है और अपनी इन्ही विशेषताओं की वजह से विश्व स्तर पर फल- फूल रही है. आज न केवल भारत में बल्कि पूर्ण विश्व में भारत का गुणगान हो रहा है.

इस अंक में विभिन्न विषयों पर लिखी गयी रचनाएं, लेख, कविताएं एवं विभागीय जानकारियों का वृहद् समावेश हुआ है तथा अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी लेखन कला को सामने रखने का अवसर प्राप्त हुआ है. कार्यालय के ‘ग’ क्षेत्र में होने के लिहाज से हिंदी को सरकारी कामकाज में उपयोग करने हेतु अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना व बढ़ावा देना अतिआवश्यक है ताकि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकें.

पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोगी सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं व आशा करता हूँ कि आने वाले वर्षो में पत्रिका का प्रकाशन अनवरत् जारी रहेगा.

जय हिन्द

(आशीष कौशल)
निदेशक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

'भारतीय सर्वेक्षण विभाग'
250 वर्षों का गौरवशाली इतिहास
वैज्ञानिक विभागों में सबसे पुरातन
उत्कृष्ट, कर्मठ, अद्वितीय, अनुपम

भारतीय भू-सम्पदा का मापक,
पग-पग का संरक्षक
सूत्र वाक्य ही सम्पूर्णता का परिचायक
'हम राष्ट्र के प्रत्येक इंच से अवगत'

पण्डित नैन सिंह, आर एन सिकदर
कर्मठ सुयोग्य देश के कर्णधार
हिमालय की सर्वोच्च चोटी जिनके नाम से सुशोभित
उन जार्ज एवरेस्ट के गुण से कौन नहीं परिचित

विश्व मानचित्र पटल पर भारत को लाकर
सर्वोच्च चोटी की ऊंचाई बताकर
जग में भारत की शोभा बढ़ाई

कन्याकुमारी से कश्मीर तक,
और कच्छ से कामरूप तक हम एक हैं
हम एक हैं, जग को बतलाई ....।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

अंग्रेजी का बुखार

अब सब पर अंग्रेजी का बुखार चढ़ा है
हर घर में इसका प्रचार बढ़ा है
हैलो, हाय का दरबार है
नमस्कार बेचारा हताश है

कभी कृष्ण, कभी जॉन हुए
अब डिस्को भगवान हुए
भूल गये शुक्रिया माफी
आज सीखते हैं थैंक-यू, सॉरी

दाल-भात से बचते हैं अब
पिज्जा बर्गर खाते हैं सब
गीत-गजल कुछ समझ न आए
माइकल जैक्सन सबको भाए

दूध-दही से टूटा नाता
केक टॉफी से दिल लग जाता
अब सब ओर अंग्रेजी की बहार
संस्कृति पर हो रहा वार ।।

--श्री अनुपम बैरागी
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

देश का विकास

माननीय जी देश का हो रहा विकास है ।

घोटाला-भ्रष्टाचार-दंगा मुक्त भारत
आपने लिखी विकास की नई ईबारत
वैदेशिक सम्बंधों में बढ़ी मिठास है..........।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है....।।

अमरीका, इजरायल, जर्मनी और जापान
सबसे बनाए मधुर सम्बंध और विकास को किया गतिमान
परंतु आंतरिक सम्बंधों में अब भी वही खटास है....।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है..........।।

नोटबंदी के चक्कर में पूरा देश पस्त हो गया
अच्छे दिन आएंगे यह सोच सब कष्ट सह गया
भ्रष्टाचारी सलाखों के भीतर होंगे और काला धन बाहर आवेगा
जाने कब पूरी होगी यह आस है....................।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है विकास है...।।

रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं
गरीबी तो नहीं, हां गरीब मिट रहे हैं
भारत के भविष्य कर रहे रोजगार की तलाश हैं....।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है..........।।

हमारे सच्चे पालक, प्रतिपालक, भारतीय किसान
कोई क्या जानें मंहगाई के इस दौर में खेती नहीं आसान
खेती के लिए भी कर्ज में डूबे हुए हैं
इनका विकास तो दूर की कौड़ी है,
अपने ही खेत में बंधुआ मजदूर बने हुए हैं

एक तो बाढ़ – सुखाड़ की त्रास है
ऊपर से सरकारी नीतियों ने भी किया निराश है.....।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है............।।

माननीय जी से विनम्र निवेदन,
भाषण-सम्भाषण से ऊपर हो रोजगार सृजन ।

हर हाथ को काम और हर परिवार को आवास हो
जन-जन की भागीदारी के बिना अधूरा हर विकास है
माननीय जी सुनेंगे सबकी आवाज, यही इक आस है....।
माननीय जी देश का हो रहा विकास है...............।।

-श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

छायांकन: श्रीमती सुपर्णा राय, अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

नक्शे – पोर्टल डिजिटल इण्डिया की ओर बढ़ते कदम

भू-स्थानिक क्षेत्र में भारत सरकार ने दो महत्वपूर्ण पॉलिसी लेकर आई - National Map Policy 2005 और National Data Sharing & Accessibility Policy (NDSAP - 2012)। राष्ट्रीय मानचित्र नीति के परिणामस्वरूप भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने 1:50K स्केल पर खुली श्रृंखला के मानचित्रों को प्रकाशित किया जो कि देश के भीतर विभिन्न विकासोन्मुख गतिविधियों में सहायक सिद्ध होगी। इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ते हुए सरकार ने सभी भारतीय नागरिकों को इसे सुलभता से उपलब्ध कराने हेतु NDSAP-2012 की सहायता से नक्शे पोर्टल की शुरुआत की है। इसकी सहायता से कोई भी भारतीय नागरिक जिसके पास आधार संख्या उपलब्ध है, इस पर लॉग-इन कर उपलब्ध मानचित्रों को प्राप्त कर सकता है। वर्तमान में इसकी पीडीएफ फॉर्मेट डाउनलोड करने हेतु उपलब्ध है। 15 अप्रैल, 2017 तक भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा 4300 Open Series Maps जारी किये जा चुके हैं. इनमें से 3200 मानचित्र 'नक्शे' पोर्टल पर नि:शुल्क डाउनलोड हेतु उपलब्ध हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग इस वर्ष अपनी स्थापना की 250वीं वर्षगांठ मना रहा है। इसके द्वारा उठाया गया यह कदम निश्चित रुप से डिजिटल इण्डिया के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

नक्शे पोर्टल पर मानचित्रों के डाउनलोड करने से पूर्व आपको निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :-

1. आपके पास 12 अंकों वाली आधार संख्या का होना आवश्यक है।
2. आधार संख्या के साथ लॉग-इन करने के पश्चात पोर्टल आपके आधार संख्या से जुड़े मोबाईल संख्या पर एक OTP प्रेषित करेगा, जिसके निर्धारित फील्ड मे दर्ज करने के पश्चात आपकी पहचान सुनिश्चित की जाएगी।
3. मानचित्र के डाउनलोड करने हेतु सम्बंधित मानचित्र की शीट संख्या आपको ज्ञात होनी चाहिए। यदि आपको शीट संख्या ज्ञात नहीं है, तो चिंता की कोई बात नहीं आप सम्बंधित राज्य, जिला व निकटवर्ती स्थान की सूचना दर्ज कर इच्छित मानचित्र की सूची प्राप्त कर सकते हैं।
4. मानचित्रों के डाउनलोड करने से पूर्व आपको इसके गोपनीयता नीति (Privacy Policy) पर अपनी सहमति प्रदान करनी होगी।
5. यहां से डाउनलोड कर प्राप्त किये गए मानचित्रों के क्रय-विक्रय को सर्वथा प्रतिबन्धित किया गया है।

6. इन मानचित्रों का प्रयोग विकासात्मक कार्यों के लिए, अध्ययन और अनुसंधान कार्यों के लिए तथा यात्रा एवम् पर्यटन के लिए किया जा सकता है।

नक्शे पोर्टल का आधिकारिक जाल स्थल :
http://www.soinakshe.uk.gov.in/Home.aspx

--श्री कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

छायांकन: श्रीमती सुपर्णा राय, अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

जीवन

विलियम शेक्सपीयर ने कहा था कि जिन्दगी एक रंगमंच है और हम लोग इस रंगमंच के कलाकार। सभी लोग जीवन को अपने-अपने नजरिए से देखते हैं। कोई कहता है जीवन एक खेल है, कोई कहता है जीवन ईश्वर का दिया हुआ उपहार है। कोई कहता है जीवन एक यात्रा है, कोई कहता है जीवन एक दौर है और बहुत कुछ। मैं आज यहां पर 'जीवन' के बारे में अपने विचार शेयर कर रहा हूं और बताने की कोशिश करुंगा कि जीवन क्या है।

मनुष्य का जीवन एक प्रकार का खेल है और मनुष्य इस खेल का मुख्य खिलाड़ी। यह खेल मनुष्य को हर पल खेलना पड़ता है। इस खेल का नाम है विचारों का खेल। यहां मनुष्य को दुश्मनों से बचकर रहना पड़ता है और मनुष्य अपने दुश्मनों से तब तक नहीं बच सकता जब तक मनुष्य के मित्र उसके साथ नहीं हैं। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र विचार है और उसका सबसे बड़ा दुश्मन भी विचार ही है। मनुष्य के मित्रों को सकारात्मक विचार कहते हैं और मनुष्य के दुश्मनों को नकारात्मक विचार कहा जाता है। जीवन रुपी खेल का मूल-मंत्र यही है कि वह जैसे खिलाड़ी का चयन करता है उसे उसी का साथ लेकर आगे खेल पूरा करना पड़ता होता है। अर्थात हम सकारात्मक विचार रुपी मित्रवत् खिलाड़ी का चयन करते हैं तो इस खेल में हमें सर्वथा विजय प्राप्त होती है। यदि विजयश्री गले नहीं भी आती तब भी हार को सामना करने की शक्ति उसे मिलती है। वहीं यदि शत्रुरुपी नकारात्मक विचारों को अपनाते हैं तो हमें हर कदम पर ठोकरें खानी पड़ती है। यदि भूले से विजयश्री प्राप्त भी हो जाती है तो वह अपने संग-संग अहंकार रुपी कांटे को भी साथ लाती है जिसके कारण विजयश्री का हार अधिक समय तक धारण योग्य नहीं रहता।

इसलिए हमें अपने जीवन में सदैव सकारात्मक विचारों का चयन करना चाहिए।

--श्री ओमप्रकाश रॉय
पटलचित्रक (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हिन्दी – भारत की अखण्डता का प्रतीक

हिन्दी हमारी राजभाषा है। 'राजभाषा' अर्थात् राजकीय प्रयोग के लिए अधिकृत भाषा। विभिन्न कार्यालयों में इसका प्रयोग मजबूरीवश राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अन्तर्गत निर्धारित न्यूनतम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है। वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस अथवा हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में हर बार संकल्प लिया जाता है कि हिन्दी के विकास में बढ़ावा देंगे और यथासम्भव हिन्दी में कार्य करेंगे, परंतु अगले ही दिन फिर से वही 'ढाक के तीन पात'। हिन्दी के लिए इससे अधिक दुर्दिन और क्या हो सकता है कि जब उसे अपने ही हिन्दुस्तान में केवल हिन्दी पखवाड़ों में याद किया जाए। दूसरी ओर हिन्दी को छोड़ अंग्रेजी में बात करना स्टेटस सिम्बल बन जाए। इतना ही नहीं हिन्दी में बात करना, हिन्दी माध्यम में अध्ययन-अध्यापन करना आपके निम्न सामाजिक स्तर को दर्शाए, फिर आप हिन्दी के सम्मान की क्या कल्पना कर सकते हैं।

विविधताओं से भरे इस भारतवर्ष में हिन्दी एक भाषा से बढ़कर है। कन्याकुमारी से काश्मीर तक और पूर्वोत्तर भारत के दुर्गम पर्वतीय प्रदेश से कच्छ के रन तक हिन्दी पूरे भारतवर्ष को जोड़ने का कार्य करती है। हिन्दी हमारी अखण्डता का प्रतीक है। इसलिए यदि भारतवर्ष की अखण्डता को अक्षुण्ण रखना है तो हिन्दी के विकास पर ध्यान देना होगा। उसे कार्यालयीन प्रयोगमात्र से आगे लाकर जन-जन तक पहुंचाना होगा।

सरकार इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकती है। हमने अंग्रेजों की गुलामी से भले ही 1947 में ही मुक्ति पा ली, परंतु भाषायी तौर पर हम आज भी अंग्रेजी दासता के शिकार हैं। जिस अंग्रेजों ने वर्षों इस देश को लूटा और हमारे पूर्वजों पर अत्याचार किये उसी की भाषा को आज इतना सम्मान दिया जा रहा है। इतना ही नहीं साथ-साथ हमारी राष्ट्रभाषा का अपमान भी किया जा रहा है, जो कतई स्वीकार्य नहीं है। अंग्रेजी के पक्ष में हमारे आधुनिक प्रबुद्ध वर्ग तर्क देते हैं कि यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा है, इसमें अधिक अवसर हैं इसलिए इसे अवश्य सीखनी चाहिए। सीखने में कोई बुराई नहीं लेकिन देश के भीतर इसकी अनिवार्यता क्यों?

कितने लोग विदेश जाते हैं, जिसके कारण इसकी अनिवार्यता की आवश्यकता आन पड़ी। फिर वही प्रबुद्ध वर्ग हमें इस प्रश्न का उत्तर भी देते हैं कि अपने देश में विभिन्न हिस्सों

यथा- दक्षिण भारतीय प्रदेशों में जाने पर हमें अंग्रेजी भाषा सहायता करती है। तो हमारे लिए इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है कि हमें अपने ही देश में अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी का सहारा लेना पड़े। सम्पूर्ण भारत में हिन्दी भाषा को सरकार द्वारा अनिवार्य बनाकर इस समस्या का निदान किया जा सकता है। हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमारी हिन्दी इसमें पूरी तरह से सक्षम है। किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम विदेशी भाषा नहीं हो सकती, खासकर वो भाषा जिसने हमारे देश और पूर्वजों पर अत्याचार पूर्ण कृत्य किये हों।

हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्तां हमारा

एक स्वाभिमानी भारतीय होने के नाते मेरे व्यक्तिगत विचार में सरकार द्वारा सम्पूर्ण भारत में दसवीं कक्षा तक हिन्दी भाषा को अनिवार्य बनाना चाहिए। द्वितीय भाषा के रूप में अनिवार्य रूप से अन्य क्षेत्रीय भारतीय भाषा यथा- तेलुगु, तमिल, कन्नड़, बांग्ला, मिजो, आदि भाषाओं के चयन का विकल्प देना चाहिए। साथ ही अध्ययन का माध्यम हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषा होनी चाहिए। वहीं अंग्रेजी को ऐच्छिक भाषा घोषित करनी चाहिए। जो भी व्यक्ति अपने अंतर्राष्ट्रीय भविष्य को ध्यान में रखकर अध्ययन करना चाहें वे अंग्रेजी भाषा का चयन कर सकते हैं।

सरकार को दूसरा कदम हिन्दी भाषा के वरिष्ठ भाषाविदों से मिलकर लेनी चाहिए जिसमें भाषा की जटिलताओं (जटिल कार्यालयीन शब्दों के प्रयोग) को दूर कर उसे सरल और जनमानस में लोकप्रिय बनाने में सहयोग करनी चाहिए।

जिस देश की अभिव्यक्ति का माध्यम यदि उसकी अपनी भाषा न होकर विदेशी भाषा हो, उसका सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं। आपको शायद ज्ञात हो, चीनी भाषा दुनिया की सबसे कठिन भाषा है। आज चीन-जापान हमारे सामने दो प्रमुख उदाहरण हैं जो अपनी भाषा की कठिनताओं के बावजूद अंग्रेजी के प्रभुत्व को उन्होंने स्वीकार नहीं किया है और परिणाम आपके सामने है। जनमानस की भाषा को प्रोत्साहन देने से ही हम उनके अंदर छुपी सभी संभावनाओं को उभार कर बाहर ला सकते हैं, उनकी ऊर्जाओं का सम्पूर्ण उपयोग कर सकते हैं। हमारे निदेशक महोदय ने हिन्दी कार्यशाला में एक दृष्टांत का उल्लेख किया –

एक बार जब श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित रूस के आधिकारिक दौरे पर गयी तो वहां वे स्टालिन से मिलीं। उन्होंने अपना परिचय पत्र दिया जो कि अंग्रेजी भाषा में था और बताया कि वे भारत से आई हैं। तब स्टालिन ने उत्तर दिया कि 'ये परिचय पत्र पर क्या लिखा है- ये तो न आपकी भाषा हिन्दी में है और न मेरी भाषा रूसी में है।' यह छोटी सी घटना किसी भी देश के लिए उसकी मातृभाषा के महत्व को समझाने के लिए पर्याप्त है।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

गुदगुदी-१

- बेटे के घर देर से आने पर :
  माँ – कहां था सारी रात ?
  बेटा – इमोशनल फिल्म देखने गया था 'प्यारी माँ'।
  माँ – अन्दर तेरे पापा इन्तजार कर रहे हैं। अब वो दिखाएंगे एक्शन फिल्म – 'जालिम बाप'।
- पापा – दिन भर फेसबुक पर बैठा रहता है, ये तुझे रोटी नहीं देनेवाली।
  बेटा – पापा मुझे भी पता है, रोटी नहीं देगी पर रोटी बनाने वाली तो यहीं मिलेगी।
- पति-पत्नी में लड़ाई हुई और पति घर से चला गया।
  पति – (रात को फोन पर) खाने में क्या बना है?
  पत्नी – जहर
  पति – मैं देर से आऊंगा, तुम खाकर सो जाना
  पत्नी – बेहोश।

--श्रीमती सीमा मित्रा
भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

अनोखा मन्दिर

राज्य की अपेक्षित तरक्की नहीं होने से राजा धीरसेन चिन्तित रहने लगे। उनका पड़ोसी राज्य उनसे अधिक सम्पन्न था। एक दिन संत वासु पूज्य उनके राजमहल में पधारे। धीरसेन ने उनसे अपनी समस्याबताई तो उन्होंने कहा तुम्हारी चिन्ता का निदान अत्यन्त आसान है। मैंने तुम्हारे राज्य को घूमकर देखा है। तुम्हारे राज्य के गांव और नगरों में अच्छे मन्दिर नहीं हैं इसीलिए अपेक्षित तरक्की नहीं हो पा रही है। अगर जगह-जगह कुछ अद्‌भुत मन्दिरों का निर्माण हो पाए तो प्रजा की बुद्धि विकसित होगी और व्यापार बढ़ेगा।

यह सुनकर धीरसेन ने मुनादी करवा दी कि वासु पूज्य महाराज ने कहा है कि जगह-जगह अद्‌भुत मन्दिरों का निर्माण होगा तभी तरक्की होगी, ज्ञान बढ़ेगा और व्यापार बढ़ेगा। तीन माह के अन्दर जिन गांवो के लोग इनका निर्माण कर लेंगे उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा। राजा की मुनादी सुनकर पूरे राज्य में जगह-जगह अद्भुत मन्दिर के निर्माण की होड़ सी मच गयी। देखते ही देखते तीन माह बीत गए। संत वासु पूज्य और धीरसेन राज्य का दौरा करने लगे। जगह-जगह लोगों ने एक-से-एक सुन्दर मन्दिर बनाये थे। धीरसेन ज्यों ही पुरस्कार देने की बात सोचते, बाबा कहते- यह तो कोई अद्‌भुत मन्दिर नहीं है। यह तो बस एक साधारण सा मन्दिर है। घूमते-घूमते राजा धीरसेन परेशान हो गए, मगर बाबा को एक भी मन्दिर अद्‌भुत और पुरस्कृत करने लायक न लगा।

आखिर धीरसेन हताश होकर वापस लौटने का मन बनाने लगे। तभी उनके राज्य की सीमा से लगे गांव से कुछ लोग उनके पास आए और बोले महाराज, हमारे गांव में भी पधारिए। क्या पता हमारा मन्दिर को आपको पसन्द आ जाए। धीरसेन ने सोचा कि इतना छोटा सा गांव है वहां तो वैसे ही सुविधाएं कम है। इन्होंने क्या अद्‌भुत मन्दिर बनाया होगा। फिर भी गांव वालों का मन रखने के लिए वे संत बाबा के साथ चल पड़े।

संत बाबा और धीरसेन गांव में पहुंचे और मन्दिर में घूमें तो संत बाबा बोल पड़े, वाह !! यही है अद्‌भुत मन्दिर। धीरसेन ने अचरज से चारों ओर नजर घुमायी, उन्हें मन्दिर कहीं नजर नहीं आया। वहां एक मकान अवश्य था जिसमें एक छोटा सा साधारण मन्दिर था। कुछ कमरों में बच्चे पढ़ रहे थे। एक कमरे के बाहर कुछ मरीज खड़े थे और एक चिकित्सक बारी-बारी से जांच करके मुफ्त में दवा दे रहा था। धीरसेन कुछ समझ नहीं पाये। उन्होंने बाबा की ओर देखा। बाबा बोले- धीरसेन यही तरक्की दिलाने वाला अद्‌भुत मन्दिर है।

जब तक प्रजा को शिक्षा नहीं मिलेगी, वह स्वस्थ नहीं रहेगी, तब तक तुम्हारे राज्य की तरक्की नहीं हो सकती। तुम्हारे पड़ोसी राज्य में ऐसे मंदिर नगर-नगर में डगर-डगर में है।

--श्री अनुपम बैरागी
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

छायांकन: श्रीमती सुपर्णा राय, अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मेरा पहला फील्ड

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती है जो कि उसके मानस पटल पर पत्थर की लकीर की भांति अमिट छाप छोड़ जाती है। मेरे जीवन में एक ऐसी घटना घट चुकी है जो कि मुझे हमेशा रोमांचित करती है। 1993 में टी.टी.टी.ए. कोर्स समाप्त होने पर मेरी पोस्टिंग देहरादून में हुई। नई जगह, नई परिवेश, नई जिन्दगी और नये काम, सामंजस्य स्थापित करने में कुछ समय लग गया। दुर्गापूजा का समय आ गया। मैं और मेरा साथी प्रियव्रत घोष दोनों ने देहरादून एक्सप्रेस से टिकट कटवाए। हम दोनों साथ-साथ घर गए। घर से वापिस आ कर जब कार्यालय में उपस्थित हुए तो प्रभारी महोदय ने हमें बुलाकर कहा कि डी.पी.एस. माटा जी की अचानक तबियत खराब होने से उनका काम पूरा करने के लिए आपको जाना पड़ेगा। दो दिन के अन्दर हमें जाने का आदेश हुआ। एक चारपाई, एक बेडिंग तथा कुछ जरूरी सामान के साथ 3 नवम्बर 1993 को सुबह 4 बजे देहरादून से टनकपुर को जाने वाली बस में सवार होकर चल पड़े। हरिद्धार, नजीमाबाद, मुरादाबाद होते हुए शाम 4 बजे टनकपुर पहुंचे। अंधेरा चारों तरफ बढता जा रहा था। सोच रहे थे कि अगर माटाजी से न भेट हुई तो क्या होगा। उस समय आज की तरह हर हाथ में मोबाईल नहीं था। केवल टेलीफोन के द्वारा ही काम चलता था। माटा जी तथा कार्यालय के कुछ कर्मचारी मेरा इंतजार कर रहे थे। जब कैम्प पर पहुंचे तो अन्धेरा हो चुका था। मुझे पता चला कि टेंट जंगल के एक कोने में लगा हुआ था। उस समय कड़ाके की ठंढ पड़ रही थी। पूरे दिन की थकावट के कारण जल्द ही हम दोनों एक ही टेंट में सो गए। जिन्दगी का पहला प्रोडक्टिव फील्ड होने से उस रात को थकावट के बाद भी नींद जल्द ही खुल गयी। ठंढ बहुत ज्यादा थी। दो-दो कम्बल था, फिर भी ठंढ लग रही थी। करीब चार बजे मच्छरदानी के अंदर से माटा जी ने सुप्रभात किया। बाहर में चिड़ियों के चहकने की आवाज आ रही थी। जब उजाला हुआ तो देखे कि तम्बू एक बड़े से शाल के पेड़ के नीचे लगा हुआ था। चारों तरफ शाल, सागवान, आम, बांस, महुआ इत्यादि पेड़ लगे हुए थे। बीच में एक साफ सुथरा तालाब भी था। चारों ओर मनोहारी दृश्य था। फील्ड कार्य प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ होता था। स्वतंत्र रूप से यह मेरा पहला कार्य था, इसलिए मैं भी उत्साह और रोमांच से भरा हुआ था। मैं शीघ्र ही तैयार होकर

माटा जी के साथ निकल पड़ा। शहर से निकलकर पहाड़ी रास्तों से होते हुए हम जंगल के भीतर से गुजर रहे थे। यहां चीड़, पाइन आदि के घने पेड़ों के बीच से गुजरते हुए आदिम काल की अनुभूति हो रही थी। पिथौरागढ़ तक पहले दिन एक क्लोज लूप बना था। शाम में वापिस तम्बू में आने पर माटाजी ने फील्ड कार्य से जुड़े विविध क्रियाकलापों यथा- कैश बुक में प्रविष्टि, कन्टिजेंट बिल, मस्टर रोल तैयार करना आदि एक-एक कर अच्छी तरह से सिखाया।

अगले दिन कैम्प शिफ्टिंग था। आधे रास्ते जाने के बाद हमारी जीप खराब हो गयी। पहाड़ पर ही आधा टेन्ट लगाकर हमें रात गुजारनी पड़ी। प्रत्येक बी.एम. में ग्रैविटेशन वैल्यू निकालना था। सुबह से शाम तक बी.एम. ढूंढ-ढूंढकर ग्रैविटीमीटर से ऑब्जर्वेशन करना था। दिन भर काम करते-करते कैसे शाम हो जाती पता ही नहीं चलता था। तीन दिन बाद माटाजी देहरादून वापस चले गए। सफेद बर्फ की छटा और दिन की धूप के साथ उसके बदलते रंग को देखकर प्रकृति की खूबसूरती का अहसास होता था और इससे हमारी दिन भर की थकान पल भर में मिट जाती।

हम टनकपुर से काम शुरु करते हुए पिथौरागढ़, लोहाघाट, चम्पाहाट, आसकट, उगला, धारचुला, बैजनाथ होते हुए रानीखेत पहुंचे। अब तक मेरे पास कंटिजेन्ट मनी केवल 70 रुपया बचा था। पैसे की कमी, और काम की थकान और बिना अनुभव के अकेले बाहर फील्ड कार्य, मैं उस कष्ट को अभी शब्दों में बयां नहीं कर सकता। 10 दिनों के बाद कूरियर से 3000 रुपये मिले। अगले दिन काम को देखने और सिखाने के लिए आर.एस. मौर्य जी आए। वे मेरे साथ सात दिनों तक रहे। उन सात दिनों में मैंने जो कुछ सीखा वह मेरी अमूल्य निधि है। यह आगे के कार्यालयी जीवन में बहुत उपयोगी साबित हुआ। रुड़की के पास की एक घटना अभी तक जेहन में है। रुड़की के पास बालावली एक छोटा सा रेलवे स्टेशन है। वहां से गंगा निकलती है। काम करते-करते सब लोग गंगा किनारे पहुंच गए थे। शाम होने को थी आगे सड़क पर जल-जमाव के कारण रास्ता नजर नहीं आ रहा था। ऊपर से हमारे ड्राइवर को ठीक से दिखाई नहीं पड़ता था। बड़ी मुश्किल थी यदि घूम कर जाते तो काफी रात हो जाती। फिर तय हुआ कि एक आदमी पैदल आगे बढ़ेगा उसके पीछे-पीछे जीप आएगी।

परंतु इस ठंढ में पानी में कौन जाए। आखिरकार मैं ही आगे बढ़ा। पानी में उतरते ही पुरा शरीर ठंढ से सिहर गया। जीप मुझे ओवरटेक करते हुए मेरे बगल से निकल गई। मैं वही जड़वत हो गया। फिर गांव वालों ने मुझे गरम-गरम चाय पिलाई फिर मेरी जान में जान आई।

जनवरी का महीना था, चारों ओर बर्फ की चादर बिछ चुकी थी उपर की ओर आने से काम बन्द हो चुका था। मैंने ओ.सी., पार्टी को तार भेजा। उन्होंने काम बन्द कर देहरादून आने का निर्देश दिया।

ये तीन महीना कैसे बीत गया कुछ पता ही नहीं चला। लेकिन यह मेरे जीवन में एक अमिट छाप छोड़ गया।

--श्री रुप कुमार दास
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

गुदगुदी-२

- जो अमृत पीते हैं, उन्हे देव। जो विष पीते हों उन्हें देवों के देव 'महादेव' कहते हैं। लेकिन विष पीकर भी जो अमृत जैसा मुंह बनाये उसे पतिदेव कहते हैं।
- पप्पू – मम्मी मैं टीवी देखते-देखते पढ़ाई कर लूं।
  मम्मी – हां क्यूं नहीं, पर टीवी भूलकर भी चालू मत करना।
- दूल्हा – पण्डित जी दुल्हन को बांयी तरफ बिठाना है या दांयी तरफ।
  पण्डित – देख लो, जैसा ठीक लगे, बाद में तो सर पर ही बैठेगी।

--श्रीमती सीमा मित्रा
भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

समन्दर और पत्थर

समन्दर तीर पे आकर,
मिली पाषाण से जाकर
कि तुम पाषाण तुम जड़वत,
कि तुम नादान मैं अवगत ।।

जो गुजरे पास से होकर,
वही इक मारता ठोकर

कहीं आना नहीं जाना
मेरे ही रेत के भीतर,
है तुमको दफन हो जाना

मुझे देखो मैं बल खाती
ऊफनती हूं मचलती हूं,
लहरों पे गीत मैं गाती
गगन से झूमकर मिलती,
मगन मैं नाचती-फिरती
मेरे संग तू भी चल आकर,
उसे बोली तरस खाकर ।।

सुन कर के समन्दर की,
मदभरी बातें और ताने
पाषाण यूं बोला,
तरस मत खा तू मुझपर
और न दे कोई मुझे ताने
जगत में मैं ही, रहा शाश्वत
चिरंतन काल से अब तक ।।

मैं ही चक्की हूं जो,
पीसकर तुम्हारा पेट हूं भरता
खुद तो क्षीण होता हूं,
मुंह से ऊफ भी न करता ।।

अगर तुम पूजते मुझको
मैं शालिग्राम होता हूं
अगर तुम चाहते मुझको
मकबरे-ताज होता हूं ।।

अगर तुम जौहरी हो, मुझको तराशो
फिर हीरा हूं, किस्मत धनी पत्थर
अगर तुम ठोकरें मारो
फिर पत्थर हूं, बस पत्थर ।।

यहां पर नारियां अबला बनी
प्रताड़ित होती है
और बेटियां तो जन्म से
पहले ही मरती हैं ।।

दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी का
गुणगान होता है
यहां पाषाण मुर्तियों का ही
सम्मान होता है...।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

देशभक्ति बनाम अभिव्यक्ति

देशभक्ति के जज्बे को,
मत तौलो तराजू में।
शहीदों के शहादत को
मत बेचो बाजारों में।।

बहस हो विवादों में,
जिरह हो मजहबों में।
पर जब मुल्क की बात होती हो,
तो अदब हो लहजों में।।

बड़ा फर्क होता है
खुदकुशी और शहादत में।
क्यों मातम मनाते हो
गद्दारों की फांसी में।।

जब कोई अमन के लुटेरों को
'हीरो' बना जय-जयकार करे।
तो बड़ी शरम सी होती है
इन सिरफिरों के बगावत पे।।

किसी की फांसी की सजा से,
दिल होता तो आहत है।
पर क्या करें उनका जिन्हें
मुल्क की बर्बादी की चाहत है।।

क्षमा और अहिंसा के
हम बेसक पुजारी हैं।
पर कैसे भुलाये 'पृथ्वी'
गोरी की दास्तां ।
जिसने क्षमा के बदले
दिल में खंजर उतारी है।।

बेसक मतभेद है हम में
मुल्क के कई मुद्दों पे।
पर उसका हल क्यूं ढूंढे
दुश्मनों के अड़ने पे।।

'अभिव्यक्ति' की आजादी को
हर किसी को इजाजत है।
पर क्यों न इलाज हो उनका
जिन्हें मुल्क को गाली
देने की आदत है।।

--श्रीमती सीमा मित्रा
भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

अनुशासन

(हिन्दी संवर्ग के निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चयनित)

अनुशासन शब्द हिन्दी के दो शब्दों के सार्थक मेल से बना है-अनु+शासन। अर्थात शासन के पीछे चलना। हमें अपने हर कार्यों में अनुशासन को मानकर चलना होता है। चाहे वो कार्य कुछ भी हो। सही रणनीति ही विजय लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होती है और सही लक्ष्य या रणनीति के लिए अनुशासन बहुत ही जरूरी है। हमें दैनिक कार्य से लेकर रात में सोने तक अनुशासन का पालन करना चाहिए। जैसे-नियत समय से उठना, रास्ते में चलना, किसी से वार्तालाप करना, किसी कार्य को सुचारु रुप से सम्पन्न करना इत्यादि।

सफलता प्राप्त करने के लिए लोगों को अनुशासन को अवश्य ही अपनाना चाहिए। अनुशासन के अनुरूप कार्य करने से बड़े से बड़े या जटिल से जटिल कार्य भी सुगम हो जाते हैं। हमें अनुशासन में रहकर अपने से बड़ों या छोटे से व्यवहार करना चाहिए ताकि वे हमारे आचरण से प्रभावित हो सकें। अपने से बड़ों का आदर-सम्मान भी अनुशासन का एक अच्छा उदाहरण है।

अगर हम कार्यालय में कार्य करते हैं तो हमें अपने से बड़े या छोटे स्तर के कर्मचारियों से आदर-भाव से विचार प्रकट करना चाहिए, ये अनुशासन का एक अच्छा उदाहरण होगा। हमारे हर विचार में अनुशासन का होना ही हमारी प्रगति और तेज को निखारता हैं। दुनिया के हर प्राणी जैसे अपनी छाया को अपने से अलग नहीं कर सकते, ठीक उसी प्रकार अनुशासन के बिना दुनिया के कोई भी व्यक्ति भी व्यक्ति सम्मान एवं सफलता को प्राप्त नहीं कर सकते अर्थात दूसरे शब्दों में ये भी कह सकते हैं कि अनुशासन और सफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिसे अलग नहीं किया जा सकता है। विश्व प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दूल कलाम ने अनुशासन के ऊपर अपने विचारों को व्यक्त करते समय यह कहा था कि – 'आकाश में उड़ता पक्षी भी अनुशासन को पालन करते हुए भ्रमण करते हैं तो हम मनुष्य जिसके पास ईश्वर द्वारा प्राप्त हर गुण मौजूद है तो हमें भी अनुशासन को पालन करना चाहिए।'

अत: उपरोक्त वर्णित तथ्यों का सारांश यह है कि अनुशासन व्यक्ति और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

–श्री नवनीत लाल कंचन
लेखाकार
क्षेत्रीय वेतन एवम् लेखा कार्यालय, कोलकाता

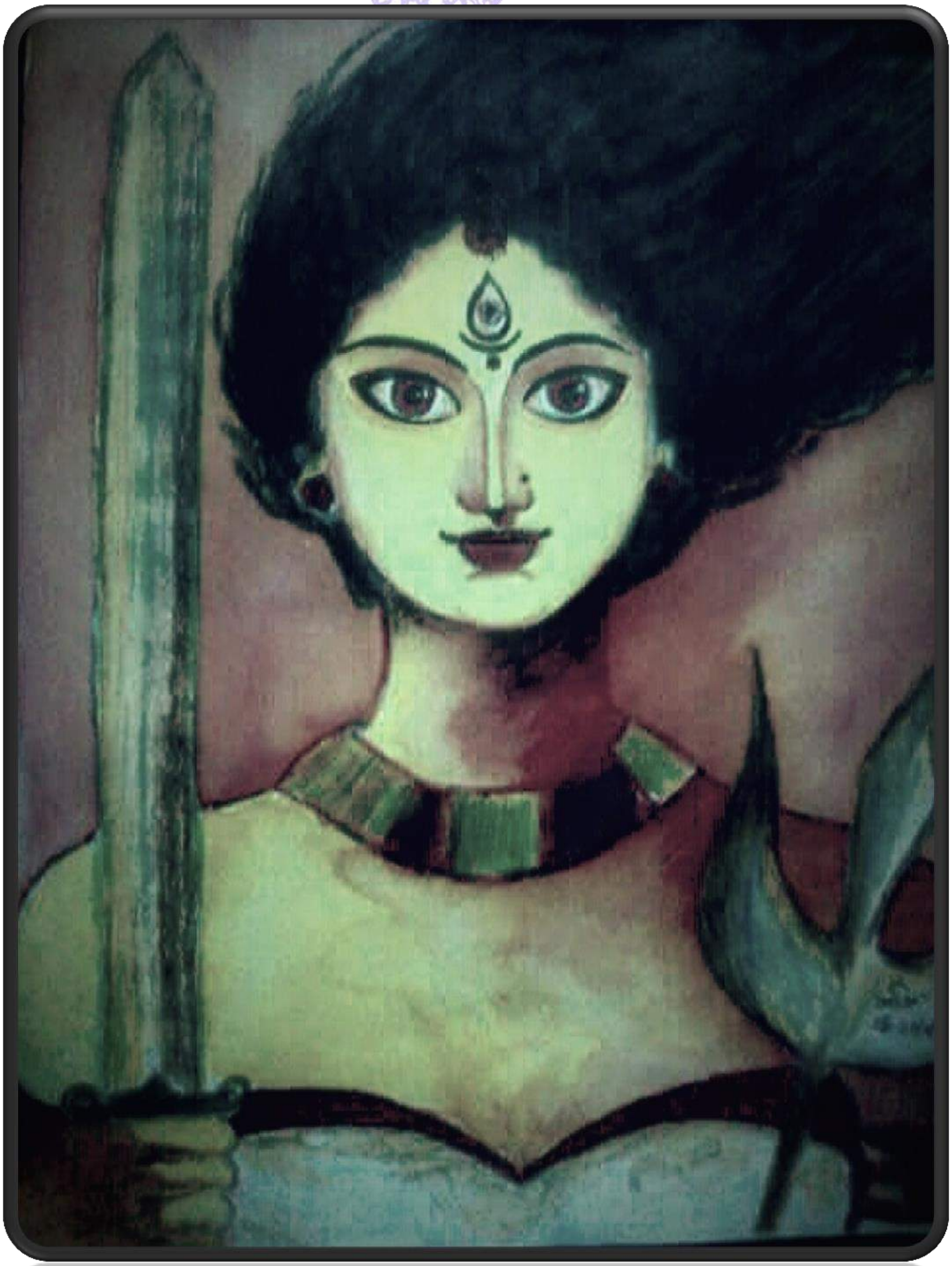

छायांकन: श्रीमती सुपर्णा राय, अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

रथयात्रा

ओडिसा राज्य में स्थित जगन्नाथ धाम हिन्दु धर्म के चार धामों में से एक है। जगन्नाथ धाम 'पुरी' की रथयात्रा विश्व प्रसिद्ध है। यह यात्रा आषाढ शुक्ल द्वितीय तिथि में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा इंद्रद्युम्न भगवान जगन्नाथ को शबर राजा से यहां लेकर आये थे। 65 मीटर ऊंचे मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चोलगंगदेव तथा अनंगभीमदेव ने कराया था। मंदिर में स्थापित, मूर्तियां नीम की लकड़ी की बनी हुई है तथा इन्हें प्रत्येक 14 से 15 वर्ष में बदल दिया जाता है। मंदिर की 65 फुट ऊंची अद्भुत पिरामिड़ संरचना, भगवान कृष्ण के जीवन का चित्रण करते स्तंभ, मंदिर की शोभा को चार-चाँद लगाते हुए प्रतीत होते हैं। हर साल यहाँ लाखों भक्त और विदेशी पर्यटक, पवित्र उत्सव 'जगन्नाथ रथ यात्रा' में हिस्सा लेने के लिए आते हैं। देश के कुछ भागों में इस पवित्र रथ यात्रा को 'गुण्डीय यात्रा' के नाम से भी जाना जाता है। जगन्नाथ रथयात्रा दस दिवसीय महोत्सव होता है। यात्रा की तैयारी अक्षय तृतीया के दिन श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा के रथों के निर्माण के साथ ही प्रारम्भ हो जाती है।

ये सभी रथ नीम की पवित्र और परिपक्व लकड़ियों से बनाये जाते है, जिसे 'दारु' कहते हैं। इसके लिए नीम के स्वस्थ और शुभ पेड़ की पहचान की जाती है, जिसके लिए जगन्नाथ मंदिर एक खास समिति का गठन करती है।

इन रथों के निर्माण में किसी भी प्रकार के कील या कांटे या अन्य किसी धातु का प्रयोग नहीं होता है। रथों के लिए काष्ठ का चयन बसंत पंचमी के दिन से शुरु होता है। यह लकड़ियां दसपल्ला और नयागढ के जंगलों से मंगाया जाता है।

भगवान बलभद्र के रथ को 'तालध्वज' कहा जाता है जिसमें १४ पहिये होते हैं। यह लाल और हरे रंग के कपडे और 763 लकड़ी के टुकड़ों से बना होता है। भगवान जगन्नाथ के रथ को नन्दीघोष कहा जाता है, इसमें १६ पहिये लगे होते हैं। यह लाल और पीले रंग के कपडे से बना होता है। इस रथ पर एक ध्वज भी स्थापित किया जाता है जिसे 'त्रिलोक्य वाहिनी' कहा जाता है। माता सुभद्रा के रथ को देवदलन कहा जाता है। यह लाल और काले कपडे और लकड़ियों के 593 टुकड़ों से बनाया जाता है, जिसमें १२ पहिये लगे होते हैं। स्नान पुर्णिमा के

दिन तीनों विग्रहों जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा को 108 घड़े के पानी से नहलाया जाता है। विग्रहों के स्नान पर्व को देखने के लिए बहुत संख्या में लोग आते हैं। आषाढ़ माह की शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को रथयात्रा आरम्भ होती है। ढोल, नगाड़ों, तुरही और शंखध्वनि के बीच भक्तगण इन रथों को खींचते हैं।

जगन्नाथ मंदिर से रथयात्रा शुरू होकर पुरी नगर से गुजरते हुए ये रथ गुंडीचा मंदिर पहुंचते हैं। यहां भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा सात दिनों के लिए विश्राम करते हैं। गुंडीचा मंदिर में भगवान जगन्नाथ के दर्शन को 'आड़प-दर्शन' कहा जाता है। गुंडीचा मंदिर को 'गुंडीचा बाड़ी' भी कहते हैं। यह भगवान की मौसी का घर है।

आषाढ़ माह के दसवें दिन सभी रथ पुन: मुख्य मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं। रथों की वापसी की इस यात्रा की रस्म को बहुड़ा यात्रा कहते हैं। जगन्नाथ मंदिर वापस पहुंचने के बाद भी सभी प्रतिमाएं रथ में ही रहती हैं। देवी-देवताओं के लिए मंदिर के द्वार अगले दिन एकादशी को खोले जाते हैं, तब विधिवत स्नान करवा कर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच देव विग्रहों को पुनः प्रतिष्ठित किया जाता है। इसे निलाद्रिविजय कहते हैं। इसके उपरांत रथयात्रा की समाप्ति हो जाती है।

रथयात्रा एक सामुदायिक पर्व है। इस अवसर पर घरों में कोई भी पूजा नहीं होती है और न ही किसी प्रकार का उपवास रखा जाता है। रथयात्रा के दौरान यहां किसी प्रकार का जातिभेद देखने को नहीं मिलता है।

--श्री कृष्ण चन्द्र दास
अधीक्षक सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

उठ जाग री मेरी गुड़िया

उठ भोर भई, उठ भोर भई, अब जाग री मेरी गुड़िया ।
जग गई सारी दुनिया ।

मम्मी—पापा जागे, जग गए मामा—मामी,
दादा—दादी जागे और जग गए नाना—नानी ।
अरे खुलि गए सारे किवड़िया, अब जाग री तू भी गुड़िया ।।
उठ भोर भई.................................

चंदा मामा जाए, सूरज दादू आए,
धूप सुनहरी छायी, हर कली मुसकाए ।
खेलन चली ये दुनिया, अब जाग री तू भी मुनिया ।।
उठ भोर भई.................................
उठ भोर भई, उठ भोर भई अब जाग री मेरी गुड़िया ।
जग गई सारी दुनिया ।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

– सुमित्रानन्दन पंत

सरकारी तंत्र को कैसे मजबूत बनाया जाए

किसी भी सरकार का काम का क्षेत्र बड़े पैमाने पर होते हैं जो कि देश के जनता की जिन्दगी की सभी दिशाएं छू जाते हैं। देश की तरक्की और विकास के लिए सरकारी तंत्र के भीतर का कार्यक्षमता बल सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए सरकारी दफ्तर में अधिकारी एवं कर्मचारी के बीच में तालमेल होना जरूरी है जो देश के अधिकतम हित के लिए है। सरकारी तंत्र से जुड़े हुए सारे लोग के अन्दर देशप्रेम, लगन एवं मेहनत करने की इच्छा होनी चाहिए। एक ओर अधिकारी एवं कर्मचारी के अन्दर खुला दिमाग, ध्यान देकर दूसरे की बात सुनने का कौशल, सहानुभूति, सहनशीलता, आत्मजागरूकता, धैर्य, अपना तनाव नियंत्रण करने की क्षमता, नेतृत्व करने का कौशल, मोलतोल की प्रवीणता, शिष्टाचार जैसे गुण होना चाहिए। दूसरी ओर ऐसे वातावरण बनाना चाहिए कि अधिकारी एवं कर्मचारी रोज दफ्तर आने के लिए उत्सुक हों। सरकारी दफ्तर का लक्ष्य के बारे में स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए नौकरी का ज्ञान और कार्यक्षमता को बढ़ावा देते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी को काम के प्रति आत्मिक आसक्ति बनाना चाहिए। साथ-ही-साथ कर्मचारी मान्यता कार्यक्रम का रचनात्मक उपयोग करना, कामकाज के दुनिया में अगली पंक्ति पर खड़ा होने वाला कर्मचारी बनाना, कर्मस्थल में पारस्परिक सम्बंध बनाए रखना, कम प्रशिक्षित या अकुशल लोगों को ऊपर उठाना, औपचारिक एवं अनौपचारिक पुरस्कार के साथ प्रदर्शन आधारित पुरस्कार की व्यवस्था करना आवश्यक है।

इस सन्दर्भ में देश के महान संतान पूर्ववर्ती राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार यह था कि –

'यदि अपनी ड्यूटी को सैल्यूट करोगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्यूट करने की जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन यदि आप अपनी ड्यूटी को पॉल्यूट करेंगे तो आपको हर किसी को सैल्यूट करना पड़ेगा।'

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के इस विचार को लेकर सभी को चलना है।

--श्री बिष्णु रंजन चक्रवर्ती
स्थापना एवं लेखाधिकारी
पूर्वी मुद्रण वर्ग कार्यालय, कोलकाता

मेरे राम

मेरा राम न जन्म है धरता,
हर घट भीतर में वो बसता ।

मैं नहीं पूजूं उनको भाई,
जो रावण से लड़े लड़ाई ।

मेरे राम को प्रेम सभी से,
मिलते सहज भाव सब ही से ।।

मैं ना ढूंढू मन्दिर-मस्जिद,
ना गिरिजा ना कोई शिवालय ।

मन के भीतर ही मैं झांकू,
निर्मल-मन-चित्त है देवालय।।

राम नहीं मन्दिर में रहते,
बच्चों की मुस्कान में बसते ।

बच्चों सा निर्मल बन जाओ,
राम को अपने सम्मुख पाओ ।।

निराकार स्वरूप है उनका,
सत्य नाम हैं सब ही उनका ।

राम चरण गहि कहें 'शुभेश',
करहुं दया नहिं व्यापे क्लेश ।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

बारिशों का शहर

शहरों में इस बार बारिशों की कहानी लिखी जाएगी
एक सदी का प्यास एक नदी न भुला सकी
बातें जो रात काटे, लाये सवेरा..........
नदी के बिखरे हुए लहरों की तरह
बे-इन्तहा तुमसे कहनी थी ।

सिवाय कुछ लहरों के नदी का कोई दर्द नहीं होता
अब की बार जोर की बारिश आयी
तो नदी में उछल के बाढ़ आया
फिर भी चूल्हा जलता है घर में
चूल्हा जलता है तो तेरी हथेली याद आती है
कितनी रात बीती तेरे हाथ थामें नदी देखे हुए
कितने सूखे पतझर मल्हार के इन्तजार में हैं
अब की बार बारिश की चिट्ठी भेजना
सुबह से शाम, शाम से रात ....
तेरा जिक्र हो रहा है, बारिश की बुन्दों की तरह

दूरियां तो शहरों के नसीब में है
फिर भी प्यार बढ़ता जाए
तेरे खिड़की में बारिश हो
तो मेरे घर में बून्दें आए ।।

--श्रीमती सुपर्णा राय
अवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सरकारी बनाम निजी प्रतिष्ठान

'सहज', 'सदय' दोऊ मित्र परस्पर
विद्या के धनी, गुणी, प्रवीण धुरंधर
अल्पकाल सब विद्या पाई
सरकारी सेवक बनने हेतु किस्मत आजमाई

'सहज' नाम अनुरूप सहजता से
सरकारी सेवक बन जाते हैं
परंतु 'सदय' अनेकों प्रयास के बावजूद
किस्मत को कोसते रह जाते हैं

दो वर्ष के पश्चात आखिरकार
एक प्रतिष्ठित निजी संस्थान ने
इनकी काबिलियत को पहचाना
सेवा का सुअवसर देकर इन्हें
और स्वयं को धन्य माना

'सहज' कार्य करें पूर्ण विनय से
प्रतिभा की नहीं कमी 'सदय' में

काज करें दोनों ही ऐसे
कर्म ही धर्म हो उनका जैसे

'सदय' ने निजी संस्थान में बेहतर प्रदर्शन कर
तरक्की पर तरक्की पाई
बोनस, इन्क्रीमेंट आदि को पाते हुए
कर्मचारी से अधिकारी वर्ग में पदोन्नति पाई

वहीं 'सहज' सरकारी सिस्टम के
चक्रव्यूह में उलझ कर रह गये
यहां अपनी क्षमता को प्रदर्शित करना
बेमानी है, नादानी है भूल गये

यहां तो वरिष्ठों से सुना
कथन सटीक बैठता है
'तुम मत सोचो कि
ऊंट किस करवट बैठता है

तुम तो हाथी की तरह
मस्त विश्राम करो
औरों को करने दो काम
तुम बस आराम करो

यदि लोगे अधिक टेंशन
तो श्रीमतीजी पाएंगी पेंशन'

भाई सरकारी सिस्टम का
हाल तो बिल्कुल निराला है
जो चाटुकार है, रसूखदार है
बस उसी का बोलबाला है

जो मेहनती है, वो
सबसे परेशान व दु:खी है
'शुभेश' जो कामचोर हैं, वो ही
सम्मानित और सुखी हैं।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

स्वच्छता का महत्व

(अहिन्दी संवर्ग के निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चयनित)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे इस समाज में ही रहकर अपना गुजर-बसर करना पड़ता है। इस समाज में रहने के लिए उसे कुछ आदतों और नियमों का पालन करना पड़ता है जिसमें स्वच्छता का विशेष स्थान है। स्वच्छता केवल मनुष्य के लिए ही नहीं अपितु सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है।

हमारे समाज में स्वच्छता का बहुत महत्व है। हमारे आस-पास का वातावरण अगर स्वच्छ हो तो रोग-व्याधियां दूर भागते हैं। जिन घरों के अन्दर और बाहर स्वच्छता रहता है वहां बीमारियां नहीं पनपती। इसलिए हमें अपने आस-पास के माहौल स्वच्छ और साफ-सुथरा रखना चाहिए। खाना खाने से पहले हाथ अच्छी तरह साबुन आदि से धोना चाहिए और बच्चों को भी इसकी आदत डलवानी चाहिए। गन्दे हाथों से भोजन करने से अनेक तरह की बीमारियां जैसे दस्त, अतिसार आदि की सम्भावना बनी रहती है।

अभी कई सालों से हमारे देश में डेंगू मलेरिया जैसी बीमारियां जोड़ पकड़ रही है। ये बीमारियां मच्छरों से ही फैलती है और मच्छर गन्दगी में ही पनपते हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश के लोग स्वच्छता के प्रति उतने जागरुक नहीं है। सड़कों के किनारे गन्दगी फैलाना यहां आम बात है। भारत सरकार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की है। इस अभियान के तहत माननीय प्रधानमंत्री महोदय सहित अन्य गणमान्य लोगों ने अपने हाथों में झाड़ू लेकर प्रतीकात्मक सफाई कार्य के द्वारा लोगों को इस दिशा में जागरुक करने का प्रयास किया है। गांवों में शौचालय के अभाव में लोगों को खुले में शौच के लिए जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे गन्दगी फैलती है और यह कई व्याधियों को आमंत्रण भी देता है। इस दिशा में सरकार द्वारा एक और कदम बढ़ाते हुए पक्के शौचालय के निर्माण पर जोर देते हुए लोगों को इसके निर्माण में आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है। हमारे देश में कोयला, गोबर आदि का उपयोग रसोई ईंधन के रूप में किया जाता है। इनके उपयोग से वातावरण प्रदुषित होता है। हमारी सरकार ने इस दिशा में कदम उठाया है और स्वच्छ ऊर्जा जैसे एल.पी.जी. सिलिण्डर की सुविधा अधिक से अधिक लोगों को मुहैया

करवाने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए सरकार ने उज्जवला नामक योजना भी प्रारम्भ भी किया है। सरकार ने कूड़े-कचड़ों की रिसाइक्लिंग प्रक्रिया भी शुरू की है, जिससे गन्दगी के स्तर के कम होने की पूरी सम्भावना है। इसके अलावे गाड़ियों में सी.एन.जी. आदि के प्रयोग से वायु प्रदुषण भी कम करने की कोशिश की जा रही है। ये सभी स्वच्छता की ओर उठाया गया कदम है। अत: हम यह कह सकते हैं कि हमने स्वच्छता के महत्व को समझा है और उसके अनुरूप कार्य करने की कोशिश की है। अंत में यह नि:संकोच कहा जा सकता है कि स्वच्छता का आज के माहौल में बहुत महत्व है। कहा भी गया है कि 'स्वच्छता में ही ईश्वर का निवास है'। हमें इसकी महत्ता को स्वीकारते हुए इस दिशा में सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसी में हम सबकी भलाई नीहित है।

--श्री बिश्वनाथ नाग
सहायक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

पुत्र की समझदारी

एक पिता अपने पुत्र को पत्र लिखता है कि बेटा- मैं बूढ़ा हो गया हूं, अब शरीर साथ नहीं दे रहा है। तुम मेरे एकमात्र सहारे हो, मगर अफसोस तुम इस समय जेल की सलाखों के पीछे हो। जब तक तुम छूटोगे, तब तक खेती का समय खत्म हो जाएगा। क्या किया जाए, खेत की गोड़ाई का समय हो गया। खेत में घास-फूस भरा है।

पुत्र ने पत्र को पढ़कर जवाब लिखा- पिताजी आप चिन्ता न करें मैंने अपने दोनों खेतों में इतना धन और सामान छिपा कर रखा है कि हमारी सात पीढी को कमाने के लिए सोचना नहीं पड़ेगा। दूसरे दिन पिता देखता है कि उसके खेतों को पुलिस वाले खोद रहे हैं। फिर पिता ने निश्चिंत होकर खेतों में बुआई की और पुत्र की समझदारी की देख गदगद हो गया।

--श्री काली प्रसाद मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

जलियांवाला बाग में बसंत

1919 इस्वी में जलियांवाला बाग की घोर निन्दनीय घटना घटित हुई थी। इसमें अंग्रेजों की क्रूर मानसिकता को प्रदर्शित करते हुए जनरल डायर ने निहत्थे भारतीयों पर गोलियां चलवाई जिसमें बूढ़े, बच्चे, महिलाएं सभी मारे गए। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में ऐसी निर्मम घटना शायद ही कहीं घटित हुई हो। इस घटना का सजीव चित्रण करती प्रख्यात रचनाकार सुभद्राकुमारी चौहान की रचना '**जलियांवाला बाग में बसंत**' उन शहीदों को श्रद्धा पूर्वक नमन करते हुए आपको आभार सहित प्रस्तुत कर रही हूं।

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।

कलियाँ भी अधखिली,
मिली हैं कंटक-कुल से,
वे पौधे, व पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।

परिमल-हीन पराग दाग सा बना पड़ा है,
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।

ओ, प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना,
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।

कोकिल गावें, किन्तु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले,
तो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।

किन्तु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना,
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर,
कलियाँ उनके लिये गिराना थोड़ी ला कर।

आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना,
कर के उनकी याद अश्रु के ओस बहाना।

तड़प तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।

यह सब करना, किन्तु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोक-स्थान बहुत धीरे से आना।

--श्रीमती सीमा मित्रा
भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

तंद्रा-भंग

आज मन उदास था
परिस्थितियों से निराश था
ना कोई साथी न कोई सहारा था
जिन्दगी ने मानो कर लिया किनारा था

नौकड़ी की तलाश में
आज फिर निकल पड़ा
जो बची-खुची रेजगाड़ी थी
उसे ही पर्स में रख चल पड़ा

बस की खिड़की वाली सीट
मैंने पकड़ ली
मेरे विचारों के साथ-साथ
बस ने भी रफ्तार धर ली

अगले स्टॉप पर
एक षोडषी ने बस में प्रवेश किया
मेरे बगल की सीट पर
झट कब्जा कर लिया

कब तक मैं यूं ही भटकता फिरुंगा
क्या मैं भी कभी
ऐसी किसी षोडषी से मिलूंगा

नयन मूंद कर मैं,
स्वप्नलोक में खोने लगा
तभी उस षोडषी का हाथ
मेरे सीने पर चलने लगा

लगता है मेरे जख्मों पर
वो मरहम लगा रही है
मेरा दर्द समझ कर मुझे
अपना बना रही है

अचानक बस झटके से रुकी,
मेरी तंद्रा टूटी

अब न तो मेरा पर्स दिख रहा था,
न ही वो षोडषी दिखी
मैं जिसे स्वप्न-सुन्दरी समझ रहा था,
वो कमबख्त पॉकिटमार निकली।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

बालक की विद्वता

बहुत पुराने समय की बात है, बंग-प्रदेश के सुतानूटि राज में एक बार पूरे देश भर के विद्वानों का सम्मेलन हुआ। जिसमें राम-कथा, तर्कशास्त्र प्रतियोगिता, धर्म-सम्मेलन, आदि अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इसमें देश के विभिन्न प्रदेशों से अनेकों विद्वानों ने भाग लिया। अवध, मिथिला और दक्षिण भारत के अनेक भागों से भी विद्वान लोग आए। उस समय बंगभूमि में ऐसे सम्मेलन प्राय: होते रहते थे। खासकर मिथिला और बंग-प्रदेश के विद्वानों का समागम प्रादेशिक, वैचारिक और सांस्कृतिक क्षेत्र की समानता के कारण अक्सर होता रहता था।

उस समय तक मिथिला के विद्वान अपने विद्वता कौशल के कारण पूरे भारत में प्रसिद्ध हो चुके थे। जगद्गुरु शंकराचार्य भी यहां आकर शास्त्रार्थ में आचार्य मंडन मिश्र और भारती के हाथों परास्त हो चुके थे। यहां भी मिथिला के विद्वान अपनी विद्वता का लोहा मनवा रहे थे। तीन दिनों से चल रहे वाद विवाद में अनेकानेक विद्वानों ने अपनी विद्वता का परिचय दिया। अंत में मिथिला के विद्वान कवि तर्करत्न महोदय की बारी आई। अपनी विद्वता से उन्होंने सभी उपस्थित सज्जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहां उपस्थित भीड़ में से एक बालक उठा और उनसे पूछा कि मान्यवर कि आप इतने बड़े ज्ञानी हैं तो क्या आप मेरी छोटी सी बात का मतलब समझा सकते हैं? वे बोले अवश्य – पूछिये। उस बालक ने पूछा कि 'टाका माटी, माटी टाका' का अर्थ क्या हुआ? इस पर वे बोले कि बालक ये तो बंग भाषा में है, जहां तक थोड़े बांग्ला ज्ञान से जान पाया हूं कि टाका का अर्थ रुपया और माटी का अर्थ मिट्टी होता है, तुम बतलाओ। इस पर बालक बोला- कि मान्यवर, इसका अर्थ है- रुपया अर्थात् धन जो परहित के काम न आ सके वह मिट्टी के समान है और जो मिट्टी भी दूसरे के काम आ जाए वो धन से बढ़कर है। तर्करत्न महोदय बालक की बातों से बहुत प्रभावित हुए और उसे आशीष देते हुए बोले कि इतने कम आयु में तुम्हारी इतनी विलक्षण प्रतिभा के कारण भविष्य नि:संदेह तुम्हें पलकों पर बिठायेगी।

-श्री रतन दे सरकार
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

यूं ही सफर में

वो सहमी, वो चुपचुप, अपने में गुमसुम ।
न बोले न हंसती, डब्बे में कोई नहीं भी है वैसी ।
मेरा ध्यान खींचे, क्यूं है वो ऐसी ।।

उसके साथ कुनबा है सारा का सारा।
पर लगता नहीं कोई उसको है प्यारा ।।

गोद में उसकी है, नन्हीं सी गुड़िया ।
कोमल—सुकोमल, चंचल इक बिटिया ।।
कभी मुंह चूमें, कभी बाल खींचे वो नन्हीं सी गुड़िया ।

उस नन्हीं सुकोमल की चंचल छुअन की,
सहज एक चाहत उठती है मन में ।

पर जैसे उस मां को उस नन्हीं सी जां की,
न थोड़ी सी चिंता, न चाहत है मन में ।।

हुई रात अब तो सोने की चिंता,
छ: सीट है और सात सवारी ।
लो सीटों पे सोएंगे सारे के सारे,
बस नीचे सोएगी, अम्मा संग प्यारी ।।

कहते वो आए मां वैष्णों यहां से ।
जो जगत जननी सबकी वो जगदम्बे मां से ।।
पूछे है ये मन, क्यूं इतनी उपेक्षा,
उस नन्हीं सी जां की, जां की और मां की ।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

प्रार्थना

जो किये हो आज तक, सब कुछ भूल जाओ
नई जिन्दगी ढूंढने में, आगे कदम बढाओ
ईश्वर के पास प्रार्थना कर, कुकर्म के लिए कर क्षमा
कभी यह मन में, पाप ना हो जमा

कु-रास्ता मत दिखाओ
हम-सबको सद्बुद्धि दो
शरीर में दो तुम ऐसी एक शक्ति
उसके साथ दो बहुत-बहुत भक्ति

बाजू में दो दुर्दमणीय बल
साथी दो ऐसा एक दल
जो कर सके असाध्य काज
तैयार करे सुन्दर नया समाज

जहां सब मनुष्य होगा सत्
मुसलमान बनें मौलवी, हिन्दु बने संत
पैदा नहीं होगी हिंसा-छल
हमारी कोशिश ना हो विफल

--श्री नब कुमार पाल
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हमारा राष्ट्र भारत और उसके राष्ट्रीय प्रतीक

सुश्री शुचि दास

(आयु – ३ वर्ष)

सुपुत्री : श्री शुभेश कुमार

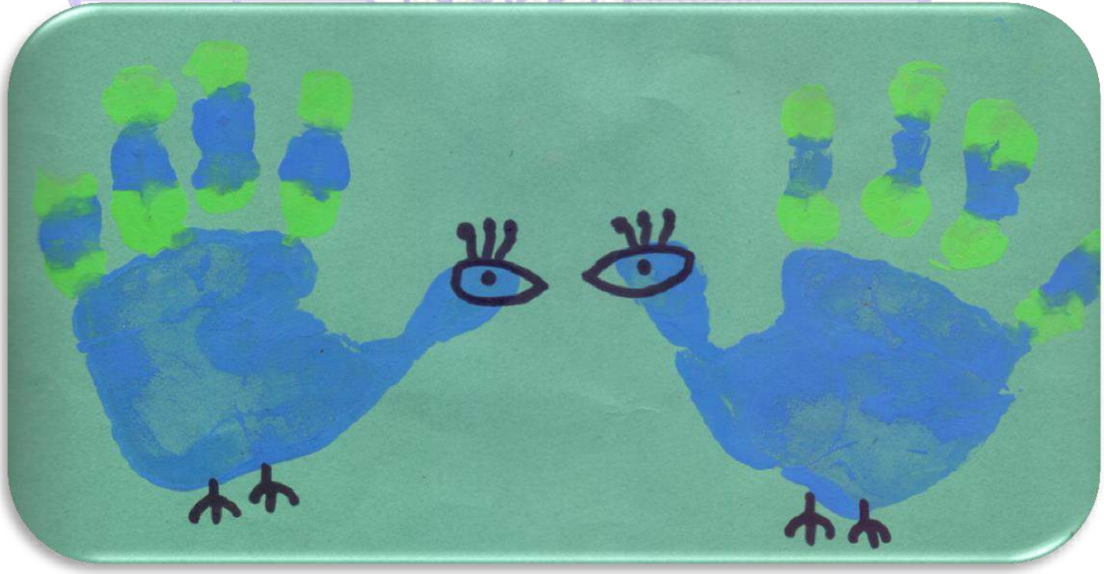

चित्रांकन

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री:श्री शुभेश कुमार

चित्रांकन

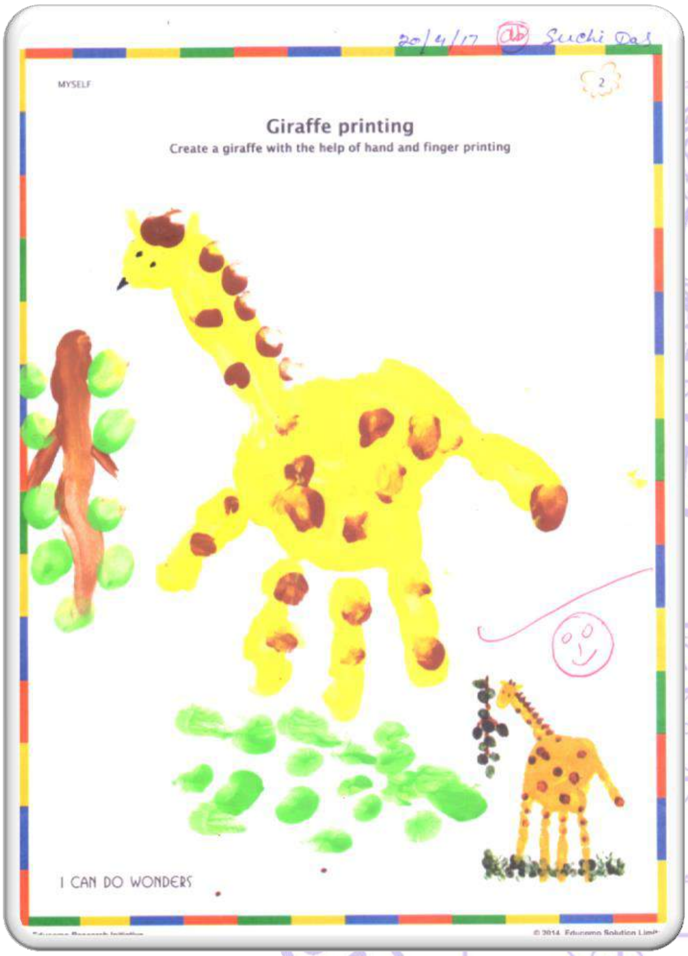

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री:श्री शुभेश कुमार

आदमी का आकाश

आज जब व्यक्ति अपने आप में सिमटता चला जा रहा है। उसे आस-पड़ोस की घटनाओं से भी कोई सरोकार नहीं रह गया है। इस परिस्थितियों में प्रसिद्ध कवि रामावतार त्यागी जी की कविता '**आदमी का आकाश**' स्मरण आ रही है। साभार आपको प्रस्तुत कर रहा हूं:-

भूमि के विस्तार में बेशक कमी आई नहीं है
आदमी का आजकल आकाश छोटा हो गया है।

हो गए सम्बन्ध सीमित डाक से आए ख़तों तक
और सीमाएं सिकुड़ कर आ गईं घर की छतों तक
प्यार करने का तरीका तो वही युग–युग पुराना
आज लेकिन व्यक्ति का विश्वास छोटा हो गया है।

आदमी की शोर से आवाज़ नापी जा रही है
घंटियों से वक़्त की परवाज़ नापी जा रही है
देश के भूगोल में कोई बदल आया नहीं है
हाँ हृदय का आजकल इतिहास छोटा हो गया है।

यह मुझे समझा दिया है उस महाजन की बही ने
साल में होते नहीं हैं आजकल बारह महीने
और ऋतुओं के समय में बाल भर अंतर न आया
पर न जाने किस तरह मधुमास छोटा हो गया है।

(साभार प्रस्तुति)

--श्री कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

ऐ मातृभूमि तेरी जय हो

देश के महान क्रांतिकारी व स्वतंत्रता संग्राम के अमर योद्धा रामप्रसाद बिस्मिल की मातृभूमि वन्दना साभार प्रस्तुत है-

ऐ मातृभूमि तेरी जय हो, सदा विजय हो ।
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कान्तिमय हो ।।

अज्ञान की निशा में, दुख से भरी दिशा में,
संसार के हृदय में तेरी प्रभा उदय हो ।

तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो ।।
तेरी प्रसन्नता ही आनन्द का विषय हो ।।

वह भक्ति दे कि 'बिस्मिल' सुख में तुझे न भूले,
वह शक्ति दे कि दुःख में कायर न यह हृदय हो ।।
(साभार प्रस्तुति)

--श्री उमेश कुमार रविदास
अभिलेखपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
- कमलापति त्रिपाठी

एक मुलाकात

मैंने अपने सेवा-काल का ज्यादा समय शिलांग में ही बिताया है। 14 दिसम्बर सन् 2007 को मुझे ऑफिस के काम से मेजर जनरल एन. आर. अनन्थ, अपर महासर्वेक्षक के साथ तवंग (Tawang, Arunachal Pradesh) जाने का निर्देश हुआ था। हमारे साथ श्री के. के. दाश सरकार, तकनीकी अधिकारी भी गए हुए थे।

हमारी टीम शिलांग से सुबह सरकारी गाड़ी द्वारा शाम को भालुकपोंग (Bhalukpong) पहुंचे और रात को सर्किट हाउस में ठहरे। 15 दिसम्बर की सुबह हम लोग तवंग के लिए निकले। भालुकपोंग से सड़क मार्ग द्वारा तवंग तक चलते हुए कई महत्वपूर्ण स्थान मिले थे, जो किसी भी पर्यटक को मोहित करने के लिए काफी था। हमारी पहली नजर एक झरने पर गई जो बिल्कुल सड़क के नजदीक में थी। हम लोग उस झरने को देखकर इतने मोहित हुए की गाड़ी से उतर कर एक दूसरे पर झरने का पानी छिड़कने लगे। कुछ देर चलने के बाद हम लोग टेंगा वैलि (Tenga Valley) पहुंचे जहां से इंडियन आर्मी की 5 माउंटेन डिविजन IV Corps का क्षेत्र (Jurisdiction) की शुरुआत होती है। सेना छावनी की परिसर मे चलने के दौरान एक हास्यप्रद घटना घटी। मैं आर्मी रंग का जैकेट पहने हुए ड्राईवर के साथ बैठा था। हमारी गाड़ी जब कोई सैनिक के सामने से जाती थी तो वो लोग मुझे सैल्यूट करते थे और यह सब मेजर जनरल साहब देख रहे थे। हमारी गाड़ी में दो स्टार और Corps of Engineer की झंडी लगी हुई थी। मुझे आर्मी रंग का जैकेट में देखकर उन्हें भ्रम हो रहा था की मै जनरल साहब हूं ओर इस कारण से सैनिक सैल्यूट कर रहे थे । मेजर जनरल साहब ने भी मुझे कहा की तुम बिलकुल आर्मी जवान जैसे ही लग रहे हो। जब हम लोग बोमदिला (Bomdila) में पेट्रॉल भरवाने के लिए रुके तो कुछ पुलिस वालों ने भी मुझे सैल्यूट किया। तब मैनें सोचा बहुत मज़ाक हो गया बस और नहीं। आखिरकार मेंने मेजर जनरल साहब को फ्रंट सीट मे बैठने के लिये अनुरोध किया और वो मान गए। शाम 4 बजे हम लोग सेला पास (Sela Pass) पहुंचे और इस जगह की अद्भुत दृश्य हमारी टीम की लंबी थकान एक झटके में दूर कर दी।

सेला पास अरुणाचल प्रदेश में 13,680 फुट की ऊंचाई पर है। सेला पास में एक सुंदर झील है और झील के परिवेश में रंगीन झंडे लहराये जाते हैं। जिस कारण झील में एक अद्भुत दृश्य दिखायी देता है। इस क्षेत्र में तापमान शून्य डिग्री था और झील का पानी बर्फ की स्लैब जैसा दिख रहा था। यहाँ पर एक ठंडी-सी लहर भी चल रही थी। हमें और भी आश्चर्य हुआ जब यहां हमें हिमपात का आनंद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेजर जनरल साहब ने

बर्फ के गोले उठाए और हम पर फेंकने लगे। हम भी इस प्रकृति की भव्यता का आनंद लेते हुए अपने बचपन में वापस चले गए थे।

हमारा अगला पड़ाव जसवंत सिंह युद्ध स्मारक था, जो सन् 1962 की भारत-चीन युद्ध के भारतीय सैनिकों की बहादुरी और वीरता की याद दिलाता है। दरअसल, इस लेख को लिखने का मेरा उद्देश्य है जसवंत गढ़ के बारे में पाठकों को बताना क्योंकि इस जगह का मुख्य नायक राइफलमैन जसवंत सिंह रावत माना जाता है। जिन्होंने बड़ी ताकतवर चीनी सेना से लड़ाई लड़ी और उन्हें अपने इलाके में आक्रमण करने से रोका। मेजर जनरल का फ्लैग और स्टार प्लेट देखकर हमें गढ़वाल रेजिमेंट के सैनिकों ने चाय और पकौड़े की पेशकश की। हमने तवांग में हमारे सर्वेयर के लिए कुछ ताजा सब्जियां ले लीं थीं। शिष्टाचार से मेजर जनरल साहब ने उसमे से कुछ सब्जियाँ गढ़वाल रेजिमेंट की टुकड़ी को भेंट की।

मैंने अपनी चाय जल्दी खत्म कर दी और जसवंत सिंह रावत की युद्ध स्मारक में प्रवेश किया। मैं अकेला था। सबसे पहले जसवंत सिंह रावत के कांस की मूर्ति पर मेरा ध्यान आकर्षित हुया जिसमें उनके कन्धे और छाती तक की मूर्तिकला को स्थापित किया गया है। बगल के कमरे में, मैंने एक ट्रंक, सेना पोशाक, जूते, बेल्ट आदि देखा। सभी पोशाक स्वच्छ और सुव्यवस्थित थे। इन्हे इस्त्री किया गया था और इस तरह से रखे गए थे कि सेना अधिकारी उसे अपने कर्तव्य-पालन के लिए जैसे अभी ही पहनेंगे। मैंने अपने डिजिटल कैमरे से जसवंत सिंह रावत के कांस की मूर्ति एक तस्वीर ली लेकिन अचानक मुझे लगा कि जैसे कोई मेरे कंधे पर अपनी सांस छोड़ रहा है। मेंने घूम कर पीछे देखा लेकिन कोई नजर नहीं आया। मुझे अपने सिर से पैरों तक एक भय की लहर महसूस हुई। पता नहीं कौन सी अदृश्य शक्ति थी जो मुझे इस तरह भयभीत कर रही थी? मैं अपने आप खुद के साथ बातें कर रहा था कि मुझे कैमरे का फ्लैश इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था। कोई शायद मुझे कह रहा था कि फ्लैश के इस्तेमाल से उनको परेशानी हो रही है और मैंने भय के कारण चुपचाप वह जगह छोड़ दी और सेना पोस्ट के पास मेरी टीम में शामिल हो गया। मैंने अपनी भावना एक सेना के पास व्यक्त की। उसने मुझे एक कहानी बताई।

17 नवम्बर सन् 1962 को अरुणाचल प्रदेश पर कब्ज़ा करने के लिए चीनी सैनिको ने हमला किया था और उस वक़्त वहाँ भारतीय सेना अचानक युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। जब हालात काबू से बाहर हो गये तो यहाँ से गढ़वाल रायफल की चौथी बटालियन को हट जाने के लिए आदेश दिया गया था। जब आदेश का पालन कर पूरी बटालियन वापस लौट गयी तो पोस्ट पर रह गए गढ़वाल रायफल के सिर्फ 3 जवान, उनमे से एक थे वीर साहसी जवान जसवंत सिंह रावत और उनके दो साथी लांस नाइक त्रिलोक सिंह नेगी और रायफल मैन गोपाल सिंह गुसाईं।

उस वक़्त जसवंत सिंह रावत ने एक कड़ा फैसला लिया कि कुछ भी हो जाये मैं वापस नहीं जाऊंगा। उन्होंने लांस नाइक त्रिलोक सिंह नेगी और रायफल मैन गोपाल सिंह गुसाईं को वापस भेज दिया और खुद नूरानांग की पोस्ट पर तैनात होकर दुश्मनों को आगे ना बढ़ने देने का फैसला लिया।

जसवंत सिंह रावत ने अकेले ही 72 घंटे तक चीन के 300 दुश्मनों को मौत के घाट उतारा और किसी को भी आगे नहीं बढ़ने दिया। उन्होंने पोस्ट की अलग-अलग जगहों पर रायफल तैनात कर दी थी और कुछ इस तरह से फायरिंग की जो चीनी सेना को लग रहा था की यहाँ पूरी की पूरी बटालियन मौजूद हैं। इस बीच जसवंत सिंह रावत के लिए खाने-पीने का सामान की आपूर्ति वहाँ की दो बहनों शैला और नूरा ने की थी। फिर 3 दिन के बाद जब नूरा को चीनी सैनिको ने पकड़ लिया और शैला पर ग्रेनेड से हमला किया शैला शहीद हो गयी, और उसके बाद उन्होंने नूरा को भी मार दिया। नूरा और शैला की इतनी बड़ी शहादत को हमेशा जिंदा रखने के लिए आज भी नूरनाग में भारत की अंतिम सीमा पर दो पहाड़ियां है जिसे नूरा और शैला के नाम से जाना जाता है। खाने-पीने के सामान की आपूर्ति बंद होने के बावजूद भी जसवंत सिंह रावत दुश्मनों से लड़ते रहे। अंत में जसवंत सिंह रावत ने खुद को गोली मार कर अपने प्राण न्योछावर कर दिए और सेला पास की पहाड़ियों में भारत माता की गोद में हमेशा के लिए सो गए।

चीनी सैनिको ने देखा की वो 3 दिनो से एक ही सिपाही के साथ लड़ रहे थे तो वो भी हैरान रह गए। क्रोध से वो जसवंत सिंह रावत का सर काटकर अपने देश ले गए। 20 नवम्बर, सन् 1962 को युद्ध विराम की घोषणा कर दी गयी, और चीनी कमांडर ने जसवंत सिंह रावत की इस साहसिक बहादुरी को देखते हुए न सिर्फ जसवंत सिंह रावत का सिर वापस लौटाया बल्कि सम्मान स्वरुप एक कांस की बनी हुई जसवंत सिंह रावत की मूर्ति को भारत को भेंट की। जिस जगह पर जसवंत सिंह रावत ने दुश्मनों के साथ युद्ध किया था उस जगह पर जसवंत सिंह रावत के नाम यह मंदिर बनाया गया है और उस मंदिर में चीनी कमांडर द्वारा सौंपी गयी जसवंत सिंह रावत की मूर्ति को स्थापित किया गया है। यहाँ से गुजरने वाला हर व्यक्ति उनको शीश झुकाता है

और जवान अपनी ड्यूटी पर जाने से पहले उनको नमन नमन करते हैं। जवानों में यह भावनाएं हैं की जब भी कोई ड्यूटी पर सोता है तो जसवंत सिंह रावत उनको थप्पड़ मारकर जगाते हैं और कानों में कहते हो की मुस्तैदी से ड्यूटी करो, देश की सुरक्षा तुम्हारे हाथो में है।

इस कहानी को सुनने के बाद जसवंत सिंह रावत के अमर कथा मेरे कानो में गूंजती रही और मुझे लगा की भारत माता के एक वीर पुत्र के आत्मा के साथ मेरा मुलाकात

हुया था। मैं अपनी टीम के साथ तवंग के लिए चल पड़ा। गाड़ी में मैंने मेजर जनरल अनव्थ को यह घटना बताई । वह हँसे और कहा कि तुम जसवंत सिंह रावत के थप्पड़ से बच गए।

--श्री सिबेन्दु चक्रवर्ती
निजी सचिव
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

मुद्रण

- किसी आकृति को पलट से कागज पर या किसी अन्य वस्तु स्थानान्तरण करने को ही मुद्रण कहते हैं।
- मुद्रण को आंखों से देखा जा सकता है व समझा जा सकता है।
- मुद्रण को एक सादा सूत्र से भी समझा जा सकता है:
  कागज+स्याही = मुद्रण ।
- मुद्रण बहुत सारी मुद्रित प्रतियों के उत्पादन करने की कला व विज्ञान है।
- मुद्रण के अनेक प्रक्रम हैं जिनको निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:-
  - लेटरप्रेस प्रक्रम
  - ऑफसेट प्रक्रम
  - ग्रेव्यूर प्रक्रम।

--श्री पी. कुमार
प्रबन्धक (कनिष्ठ)
पूर्वी मुद्रण वर्ग

हिन्दी -कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- सन् 1887 को सर्वप्रथम विद्यासागर एवं केशवचन्द्र ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मानते हुए हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा या राष्ट्रभाषा नामक शीर्षक का लेख लिखा।
- सन् 1937 में जब प्रांतीय सरकार बनी तो पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा कि अखिल भारतीय भाषा यदि कोई हो सकती है तो वह सिर्फ हिन्दी है।
- 11 दिसम्बर, 1940 को डा.राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में कहा कि सभा का काम हिन्दी अथवा अँग्रेजी में होगा और कोई भी सदस्य अध्यक्ष की अनुमति से मातृभाषा में भाषण दे सकेगा।
- 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया।
- 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के साथ ही हिन्दी संवैधानिक रुप से भारतीय संघ की राजभाषा बनी। 15 वर्ष तक अँग्रेजी का प्रयोग जारी रखने तथा अँग्रेजी में प्रयोग की सीमा बढ़ाने की व्यवस्था रखी गई।
- सन् 1955 में 25 सदस्यों का एक आयोग का गठन हुआ जिसमें वर्ष 1956 में अपनी व्याख्या में कहा कि संघ तथा राज्यों में हिन्दी का प्रयोग धीरे- धीरे शुरु होगा।
- सन् 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना की गई।
- सन् 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गया । इसमें चार लाख से अधिक अँग्रेजी के तकनीकी शब्दों का पर्याय प्रकाशित किया गया।
- सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बनें। इसके बाद प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, व विधि शब्दावली का निर्माण हुआ।
- सन् 1967 में राजभाषा संशोधन विधेयक पारित किया गया, जिससे राजभाषा का पद तब तक के लिए लंबित हो गया जब तक कि राज्यों के विधान-मंडल हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए सहमत न हो जाए।
- 18 जनवारी, 1968 को भारतीय संसद ने यह संकल्प पारित काया कि अखिल भारतीय उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान में शामिल सभी भारतीय भाषाओ तथा अँग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रुप में रखने की अनुमति हो।
- सन् 1976 में केन्द्रीय सेवाओं में भारतीय भाषाओं की माध्यम का दर्जा तो मिला लेकिन एक पेपर के रुप में अँग्रेजी की अनिवार्यता बनाए रखी गई, इंजीनियरिंग, सांख्यिकी, चिकित्सा, आर्थिक परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की माध्यम की छूट नहीं दी गई।

- श्री मुकेश जैन के संघर्ष से रुड़की विश्वविधालय की अभियांत्रिकी स्नातक की परीक्षाओ में हिन्दी माध्यम की मान्यता मिली।
- सन् 1985 में जामिया विश्वविधालय में शिक्षा निष्णात की परीक्षा में हिन्दी व उर्दू माध्यम की मान्यता मिली।
- सन् 1986 में भारतीय प्रौधोगिकी संस्थान में प्रौधोगिकी विषय पर हिन्दी में लिखे गए शोध प्रंबध को पहली बार मान्यता प्राप्त हुई। इसके लेखक श्री श्याम रुद्र पाठक ने इसके लिए संघर्ष किया था।
- सन् 1987 में आयुर्विज्ञान विषय में हिन्दी में लिखे शोध प्रंबध को मान्यता मिली। इसका संघर्ष मुनिश्वर निगम ने किया। इसी वर्ष श्री पुष्पेंद्र चौहान के संघर्ष से भारतीय विघि परिषद की परीक्षओं के लिए भारतीय भाषाओं के माध्यम को अनुमति प्राप्त हुई।
- सन् 1988 में भारतीय प्रौधोगिकी संस्थाओं की प्रवेश परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम को अनुमति प्राप्त हुई।
- सन् 1989 में अभियांत्रिकी परीक्षाओं में स्वदेशी भाषाओं के माध्यम को श्री विनोद कुमार गुप्ता के संघर्ष के बाद अनुमति मिली।
- सन् 1990 में दंत चिकित्सा व आयुर्विज्ञान संस्थान की प्रवेश परीक्षा में हिन्दी माध्यम को अनुमति मिली।
- सन् 1990 में दिल्ली विश्वविधालय की विधि स्नातक परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम को अनुमति मिली। इसी वर्ष संसद ने संघ लोक सेवा आयोग की सभी परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम को शामिल करने का संकल्प किया।

--श्री राजा सरकार
मानचित्रकार डिविजन-।
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

शांति कहां से मिलेगी

विज्ञान के विकास के साथ-साथ मनुष्य ने अपने जीवन के सुख-सुविधा के लिए बहुत कुछ हासिल किया, परन्तु मन अशान्त ही रहा। एक बार उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई की मैं कौन हूं और मेरा जन्म-दाता कौन है? तभी उसे एक हवाई जहाज आसमान पर उड़ते हुए दिखा। जहाज को अपने पास बुलाया और पूछा कि तुम आसमान पर उड़ते हो और सुख में रहते होगे। जहाज ने कहा कि मैं और हमारे वंशज सब ही सुख में रहते हैं। फिर मनुष्य ने पूछा कि तुम्हारा जन्मदाता कौन है? जहाज ने कहा कि हमारा जन्मदाता विज्ञान है। इतना बताकर जहाज अपने राह पर चल पड़ा।

इसके बाद मनुष्य के मन में विज्ञान के जन्मदाता के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। उसने ध्यान-मग्न होकर विज्ञान को बुलाया। जब विज्ञान प्रकट हुआ तब उसके चेहरे को देखते हुए मनुष्य डर गया और पूछा तुम्हारा शरीर इतना भयंकर क्यों है और यह बताओ कि तुम्हारा जन्मदाता कौन है? विज्ञान ने कहा कि हमारा शरीर हमेशा जलता हुआ शक्ति से भरपूर है और हमारे जन्मदाता आप यानि मनुष्य ही हैं। मनुष्य ने कहा कि अगर हम तुम्हारे जनक हैं तो यह बताओ कि तुम्हारे बच्चे यानि जहाज सब सुख शांति से घूम रहे हैं पर हम मनुष्य जाति दु:ख-अशांति में क्यों हैं। हमारा जन्मदाता कौन है? विज्ञान ने कहा कि पिताजी मुझे माफ कर दीजिए, क्योंकि हमें इसकी जानकारी नहीं है। इतना बता सकते हैं कि कोई विद्वान यानि पण्डित आपको, आपके जन्मदाता के बारे में बता सकता है। तब मनुष्य पण्डित को ढूंढते हुए एक सत्संग में पहुंचा और पण्डित से पूछा कि महात्मा, मनुष्य का जन्मदाता कौन है, कृपया हमें बतायें। पण्डित बड़े शास्त्र ज्ञानी विद्वान थे। तुरंत उन्होंने बताया कि 'मम योनि महत ब्रह्म तस्मिन गर्भं दधामि अहम्। संभव: सर्व भूतानां ततो भवति भारत।' अर्थात् परमपिता परमेश्वर हम सबके जन्मदाता हैं। अत: वह मनुष्य का भी जन्मदाता है। तब मनुष्य ने पूछा कि हम मनुष्यजाति इतना दु:ख और अशांति में क्यूं रहते हैं। पण्डित ने कहा कि इस सवाल का जवाब हमारे पास नहीं है, सद् गुरु ही इसके बारे में बता सकते हैं। पण्डित ने बताया 'तद विधि प्रणीपातेन परिप्रश्नेन सेवया'। अर्थात सद्‌गुरु के पास जाओ और उनका सेवा करो एवं इसके बारे में पूछो। तब से मनुष्य सद्‌गुरु की तलाश में भटक रहे हैं।

--श्री रमणी रंजन दास
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

साथ रहो

ये कागज, ये कलम, मेरे साथ रहो
ये ताकत ये साहस, मेरे साथ रहो
ये सच्चाई ये सुन्दरता, मेरे साथ रहो
ये प्यार वह दीवार, मेरे साथ रहो

ये हवा ये लहर, मेरे साथ रहो
ये गीत-महासंगीत, मेरे साथ रहो
ये शब्द वह नि:शब्द, मेरे साथ रहो
ये किरण वह अंधेरा, मेरे साथ रहो

ये घर ये परिवार, मेरे साथ रहो
ये बहार ये स्वभाव, मेरे साथ रहो
ये रोटी, ये कपड़ा, मेरे साथ रहो
ये बन्दगी, ये जिन्दगी, मेरे साथ रहो

ये पेड़, ये पौधे, मेरे साथ रहो
ये जमीन ये समुन्द्र, मेरे साथ रहो
ये फूल ये खुशबू, मेरे साथ रहो
ये बहती हुई नदी, मेरे साथ रहो

ये खेती ये हरियाली, मेरे साथ रहो
ये रास्ते ये गाड़ी, मेरे साथ रहो
ये गांव ये शहर, मेरे साथ रहो
ये घूमती हुई धरती, मेरे साथ रहो

ये दोस्ती ये जिन्दगी, मेरे साथ रहो
ये बच्चे ये बूढ़े, मेरे साथ रहो
ये लड़की ये लड़के, मेरे साथ रहो
ये श्वास ये सपने, मेरे साथ रहो

ये समाज ये बाजार, मेरे साथ रहो
ये दर्शन, ये भाषण, मेरे साथ रहो
ये आशा ये भाषा, मेरे साथ रहो
ये काल ये महाकाल, मेरे साथ रहो

ये जीवन न छोड़ के चलो,
ये सफर कभी खत्म न हो, बस मेरे साथ रहो।।

-श्री शांति दास
सर्वेक्षण सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

यात्रा

पांच मील जाना है, पांच मील जाना है
पहाड़ पर चढ़कर, बर्फ पर चढ़कर
नदी को पार करना है, घाटी को पार करना है

अब चार मील जाना है, चार मील जाना है
पहाड़ पर चढ़कर जाना है, पर्वत पर चढ़कर जाना है
धारा को पार करना है, जंगल को पार करना है

अब तीन मील जाना है, तीन मील जाना है
गर्मी को पार कर जाना है, ठंढा को पार कर जाना है
झील को पार करना है, हर परीक्षा को पास कर जाना है

अब दो मील ही जाना है, दो मील ही जाना है
ऊंचाई को पार करना है, खाई को भी पार करना है
पुल पार कर जाना है, भूल-भूलैया को पार कर जाना है

अब बस और एक मील जाना है, एक मील जाना है
हर दर्द को पार कर जाना है, हर कष्ट को पार कर जाना है
समुद्र को लांघ जाना है, हर बाधा को पार कर जाना है

अंतत: लक्ष्य को हासिल कर पाया है
अब और कहीं नहीं जाना है।।

--श्री सोहम मंडल
सुपुत्र श्री तारापदा मंडल
मानचित्रकार डिवि.-।
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

शंख

शंख का नाम लेते ही मन में पूजा और भक्ति की भावना आ जाती है। यह धार्मिक महत्व के होने के साथ-साथ स्वास्थ्य में भी उपयोगी है।

शंख से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:-

1. शंख की आकृति और पृथ्वी की संरचना समान है। नासा के अनुसार शंख बजाने से खगोलीय ऊर्जा का उत्सर्जन होता है जो जीवाणु का नाश कर लोगों में ऊर्जा व शक्ति का संचार करता है।
2. शंख में 100% कैल्शियम है। इसमें रात को पानी भरकर पीने से कैल्शियम की पूर्ति होती है।
3. शंख बजाने से प्राणायाम की तीनों क्रियाएं (रेचक, कुम्भक व पूरक) एक साथ सम्पन्न होती है।
4. शंख बजाने से हृद्‌यघात, रक्तचाप की अनियमितता, दमा मन्दाग्नि में लाभ होता है।
5. शंख बजाने से फेफड़े पुष्ट होते हैं।
6. शंख में पानी रखकर पीने से मनोरोगी को लाभ होता है, उत्तेजना कम होती है।
7. शंख की ध्वनि से दिमाग व स्नायु-तंत्र सक्रिय रहता है।
8. घर में शंख बजाने से नकारात्मक ऊर्जा का वास नहीं होता है।
9. समुद्र मंथन के दौरान प्राप्त अनमोल 14 रत्नों में से एक रत्न हैं।
10. सुख सौभाग्य की वृद्धि के लिए इसे अपने घर में स्थापित करें, शंख की पूजा करने से ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

--श्री अरिन कुमार दत्ता
प्रबन्धक (कनिष्ठ)
पूर्वी मुद्रण वर्ग

संकल्प

संकल्प अर्थात् शपथ जो परिवार, समाज और देश के हित में हो। जिसे पाने के लिए अपने आप को त्यागपूर्ण जीवन जीना और दूसरों के लिए जीना सिखाता है। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पित होना आवश्यक है, अन्यथा लक्ष्य से पहले विमुख होना पड़ता है। आज मैं अपने आप को गर्व महसूस कर रहा हूं कि मैंने भी औरों के साथ संकल्प लिया। दिनांक 11.08.17 समय पूर्वाह्न 11:30 बजे भारतीय सर्वेक्षण विभाग, पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता के द्वार के सामने एक संकल्प सभा का आयोजन किया गया। जिसमें माननीय श्री आशीष कौशल, निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग एवं कार्यालय के अधिकारियों एवम् विभिन्न साथियों ने भाग लिया। निदेशक महोदय ने लोगों को धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं देकर एक संकल्प समस्त लोगों को एक साथ लेने के लिए आग्रह किया। हम सभी को संकल्प के माध्यम से अनुभूति दिलाया कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने 1942 में भारत छोड़ो का संकल्प लिया था। 1947 में महान संकल्प सिद्ध हुआ और भारत स्वतंत्र हुआ। आज हम सब मिलकर पूरी निष्ठा के साथ संकल्प लेते हैं 2022 तक नये भारत के निर्माण का।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, स्वच्छ भारत का ।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, गरीबी मुक्त भारत का ।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, भ्रष्टाचार मुक्त भारत का ।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, आतंकवाद मुक्त भारत का ।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, सम्प्रदायवाद मुक्त भारत का ।

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं, जातिवाद मुक्त भारत का ।

नये भारत के निर्माण को अपने इस संकल्प की सिद्धि के लिए हम सब मन और कर्म से जुट जायेंगे।

अंत में निदेशक महोदय ने धन्यवाद देकर सभा के समापन की घोषणा की।

--श्री देवनारायण सिंह
अभिलेखपाल
पूर्वी मुद्रण वर्ग

सीख

मानव को सामाजिक प्राणी होने के नाते कुछ सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। समाज की इन मर्यादाओं में सत्य, अहिंसा, परोपकार, विनम्रता एवं सच्चरित्रता आदि अनेक गुण होते हैं। एक छोटे से शहर में मेरा जन्म होने के कारण परिवार, पड़ोस, मोहल्ला, शहर की अहमियत बहुत बढ़ जाती है। मैं 1993 मार्च में देहरादून 101(एच.एल.ओ.) से स्थानान्तरण होकर 102(पी.एल.ओ.) कलकत्ता आया। 25 सितम्बर 1995 की रात को घर में मुझे सांस लेने में दिक्क्त महसूस हुई। सुबह जीजाजी के साथ मैं डा. जे.सी. घोष, सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट के पास गया, तो उन्होंने बताया कि मेरे हृदय के अन्दर वॉल्व में गड़बड़ी है और इसके लिए ओपन हार्ट सर्जरी करनी पड़ेगी। ये सर्जरी जितनी जल्दी हो सके उतना ही अच्छा है। ये सुनने के बाद हम सब सन्न रह गये क्योंकि ये पहला अवसर था जब मुझे कोई बड़ी तकलीफ हुई। मैंने कहा कि अगर मुझे मरना ही है तो मैं देहरादून अपने शहर और परिवार के पास जाकर ही मरूंगा।

3 नवम्बर 1995 को वाया दिल्ली देहरादून के लिए प्रस्थान किया पर दिल्ली पहुंचने पर मेरी तबीयत बिगड़ गई और मुझे एम्स में भर्ती कर दिया गया। दिल्ली में हमारे रिश्तेदारों, पड़ोसियों ने बहुत मदद की, सारा बन्दोबस्त किया। ऑपरेशन की तारीख 13 नवम्बर 1995 को तय की गयी। दिल्ली प्रिन्टिंग ऑफिस और देहरादून प्रिन्टिंग ऑफिस के दोस्तों ने 15 यूनिट खून का बन्दोबस्त किया। कलकत्ते के प्रिन्टिंग ऑफिस के साथियों ने मेरी दीदी जो कलकत्ते में रहती थी, के साथ हर समय सहयोग किया। सबलोगों का ऐसा प्यार, एक-दूसरे के प्रति चिन्ता ही हमारे जीवन का रास्ता आसान कर देती है। 13 नवम्बर 1995 को सुबह दस बजे मुझे ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया। हर कोई बेस्ट ऑफ लक कहकर हिम्मत बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। ऑपरेशन के बाद 15 नवम्बर 1995 शाम छः बजे मुझे वार्ड में शिफ्ट कर दिया। वार्ड में मेरी पूज्यनीय माँ पहले से ही मेरा इन्तजार कर रही थी। माँ को देखकर मैं आनन्द से अभिभूत हो गया। माँ का पहला शब्द 'बेटा डरने और घबराने का नाम जिन्दगी नहीं है। तुझे चलना है, दौड़ना है, लड़ना है, सबके लिए कुछ करना है। सबने तेरे लिए बहुत कुछ किया है और दुआ मांगी है, तुझे सबको देखना है। उठ और अपनी जिन्दगी जी, कर्तव्य कर बिना सहारे के।' ये शब्द माँ के मुख से निकल रहे थे और मैं सोच रहा था कि मेरी माँ के पास इतनी शक्ति कहां से आई। उसी रात को मैं बिना किसी के सहारे से, बिना किसी के डर से चला और आज भी माँ के आशीर्वाद से चल रहा हूं, दौड़ रहा हूं। आज माँ दुनिया में नहीं है पर उनके ये शब्द मुझे चलने, दौड़ने, जीवन को सही तरह से जीने में, कर्तव्य और कार्य करने में मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

--श्री सजल कुमार घोष
एल.एम.पी. ग्रेड-।।
पूर्वी मुद्रण वर्ग

यादें

(मुहल्ले के एक पार्क में दादा और उनका पोता एक साथ बैठे हुए थे। दादा के उम्र 75 वर्ष हैं। पोता देखने में नायक जैसा हैं।)

पोताः दादा आप बोल रहे थे कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग में काम करने के समय अपने बहुत कुछ देखा। उस कहानी का खजाना आज हमें भी बताईये।

दादाः सब कुछ याद नही हैं। फिर भी मेरी जिन्दगी पसीने और खून से रंगी हुई कहानी आज आज सुनाता हूँ। कोलकाता आफिस में नौकरी के लिए साक्षात्कार दिया था।

पोताः जब आप कोलकाता आफिस में साक्षात्कार दे रहे थे तब आप क्या सोच रहे थे।

दादाः मैं सोच रहा था मेरे गुरुजी की बात, जिन्होने मुझे बताया था कि सर ऊँचा करके बात करना और कभी भी तर्क नही करना।

पोताः उसके बाद।

दादाः मुझे दो साल के लिए सर्वे प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद भेज दिया गया। वहां प्रत्येक खाना में इमली का पानी और लाल मिर्च का पाउडर। मछली, मांस पोस्ता दाना पीसकर बनाता था। चावल बनाने के समय चूना का पानी डालता था। खाने का बहुत तकलीफ था।

पोताः फिर भी मजा तो बहुत किया।

दादाः सो तो किया। वह समय था जिन्दगी के सुनहरे पल। खुश होना, दुखी होना, तनाव में रहना, कैसे कैसे दिन-रात गुजरता था। पिताजी के लिए, माँ के लिए, घर के लिए, बिछड़े हुए दोस्त के लिए यहाँ पर हम बैठकर बाते करते थे, वह सब के लिए मन-ही-मन बहुत दुःखी हुआ करता था। बहुत सारा पोस्टकार्ड लिफाफा खरीद कर सबको चिट्ठी लिखा करता था। सवेरे उठकर चलना, फुटबाल खेलना, प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में रात के शो में सिनेमा देखने जाना आदि करते थे।

पोताः सुना था आपको तम्बू में रहकर प्रशिक्षण लेना पड़ता था।

दादाः तम्बू में रहने का एक अलग मजा हे।

पोताः सुना है कि बहुत गरमी होता था।

दादाः हाँ, यह सच है। गरमी के समय इतना लू चलता था कि हमें ताड़ी पीना पड़ता था।

पोताः आप लोगों को नशा नहीं होता था क्या?

दादाः थोड़ा होता था। किन्तु वहाँ महिलाएं अपने बच्चों कों गरमी से बचाने के लिए ताड़ी पिलाती थी।

पोताः हैदराबाद में देखने लायक कया था?

दादा: वहाँ पर देखने लायक सलारजंग म्यूजियम, गोलकुन्डा फोर्ट था। इसके अलावा छुट्टी के दिन टैंकबंड में घूमना और कोटी में जाकर मस्ती करता था।

पोता: हैदराबाद के बाद आपका पोस्टिंग कहा हुआ ?

दादा: दो साल के प्रशिक्षण के बाद मेरा पोस्टिंग देहरादून में हुआ। सर्दी के मौसम सें भीषण ठन्डी लगती थी। होली के समय पड़ोसी के घर जाने पर चाय के बदले दारू से मेहमानवाजी करते थे।

पोता: क्या बोल रहे हैं।

दादा: कभी भी पड़ोसी या दोस्तों के घर जाने से बच्चे लोग नमस्ते अंकल बोलकर पैर छुआ करते थे और खाना जबरदस्ती खिलाया करते थे। मेहमाननवाजी उनसे सीखना होगा।

पोता: देहरादून में देखने लायक क्या – क्या हैं।

दादा: देहरादून में देखने लायक बहुत जगह हैं। जैसे कि सहस्त्रधारा - यहाँ पहाड़ के बीच में से सहस्त्रधारा में पानी गिरता हैं और झड़ना के पानी में नहाना। वहाँ पर एक मंदिर जिसका नाम टपकेशवर हे। पुराने लोग कहते हैं कि गुफा के अंदर जो शिवलिंग हैं उसके उपर दूर की पहाड़ के अंदर से बहते हुए दुध की घारी टप- टप करके गिरता हैं। वार्षिक पूजा के समय सभी मिलकर भांग का शरबत पीते हैं। मसूरी जाने के रास्ते मे एक शिवजी का मंदिर हैं। यहाँ पर धार्मिक समारोह के समय प्रसाद के रुप में सबको भांग का शरबत दिया जाता हैं। उस मंदिर में पैसा चढ़ना मना हैं।

पोता: सुना था कि आपलोग बर्फ में बहुत मजे लिए।

दादा: सो तो हैं। लेकिन बर्फ में पहला कदम रखने के बाद मजा बहुत हैं।

पोता: मसूरी में क्या जाड़े के मौसम हमेशा बर्फ गिरता हैं?

दादा: हमेशा नही। लेकिन मसूरी जाने के पहले दाहिने तरफ धनोल्टी हैं। जहा पर बहुत बर्फ गिरता हैं। वहाँ पर मैं अपने दोस्तों के साथ सूखा बर्फ लेकर बहुत मजे किए।

पोता: आपलोगों कों ठन्डी नही लगती थी।

दादा: जब बर्फ गिरता हैं तब रुई की तरह बर्फ हवा मे तैरता हुआ जमीन पर गिरता हैं। उस समय एकदम ठण्ड नही लगता। बर्फ का गोला बनाओ और मजे से फेंको। उसमे बहुत आनंन्द मिलता हैं। वह आप नही समझोगे।

पोता: आप पौढ़ीगढ़वाल गए थे ना?

दादा: हाँ एकबार मेरे एक दोस्त के घर पौढ़ीगढ़वाल गए थे। पहाड़ के उपरीभाग में गाँव हैं। गाँव की महिलाएँ – सिर के उपर एक और कमर मे एक – एक मठका लेकर एक हजार सीढीयाँ उतर के पानी लेने सवेरे चार बार और शामको चार बार जाती थी। मैं और मेरे दोस्त सवेरे खुले में शौच करने का लिए गए। साथ में एक लीटर का पानीका बोतल। शर्त हैं,

जिसका पहले हो जाएगा वो मुँह से आवाज करके आधा बोतल पानी खर्च करेगा। वहाँ महिलाएँ और बच्चे लोग बहुत सुंदर हैं। एकदम निर्मल हैं। शरीर में चरबी नही हैं। मोटे लोग वहाँ एक भी नही मिलेंगे। वहाँ के महिलाएँ बहुत परिश्रमी हैं। खाना बनाना, बर्तन धोना, गाय से दूध निकालना, घी तैयार करना और रातों-रात जगकर फसलों का पहरा देती हैं। नही तो सुअर खेतों को खराब कर देगा।

पोताः परन्तु दादा बंगाली एवं दुसरे अनेक जाति में पुरुष लोग वह काम करता हैं। तो वहाँ का पुरुष लोग क्या करता हैं।

दादाः वहाँ आमतौर पर पुरुष मिलटरी अथवा अन्य सरकारी आफिस में काम करते हैं। छुट्टी में जब घर आते हैं तब सिर्फ हल चलाते हैं। और वहाँ पर एक मजे की बात यह हैं की झड़ने के पानी के समीप एक जाँता (चक्की) लगाया हुआ था। जो की झड़ने के प्रवाह से घुमता था। गेहूँ, बाजरा इत्यादि उसमे डालने से बिना पैसे और बिना प्ररिश्रम के आटा पाया जाता था। और मेहमान को जिस तरह इज्जत देते हैं, वह दुसरे जगह मे मिलना मुशकिल हे।

पोताः फिर आपका पोस्टिंग कहा हुआ ?

दादा : मेरा पोस्टिंग हुआ बेंगालुरु में। जाने के बाद कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। कौन तमिल, कौन मलायाली, कौन कन्नड़ और कौन तेलुगु समझ में नहीं आता था। एक बर्तन के अंदर कुछ पत्थर रखकर बजाने से जो आवाज निकलता है, उन लोगों की बात ही वैसा ही मालूम पड़ता था। परंतु कोई भी समस्या होने से वहाँ के लोग हमेशा मदद करते थे। वहाँ के लोगों को दो चीजों से बहुत प्यार होता हैं। स्वर्ण और जमीन खरीदना।

पोता : वहाँ के लोग क्या खाते हैं।

दादा : चावल, विउली का दाल, उड़द का दाल, नारियल, ईमली, इडली, ड़ोसा, पकी हुई सब्जी, साँभर, रसम इत्यादि खाते हैं।

पोता : अच्छा दादा, सुना था वहाँ के लोग बहुत पूजा-पाठ करते हैं।

दादा : हाँ, सच बात है। वहाँ के लोग गणेशजी, शिवजी, कार्तिकजी, तिरुपति इत्यादि देवताओं को बहुत मानते हैं। परंतु अयप्पाजी की सबसे ज्यादा पूजा करते हैं। हर साल नवम्बर से जनवरी महीने तक सभी लोग अयप्पाजी के दर्शन करने जाते हैं।

पोता : महिलाएँ और लड़कियाँ नहीं जाती हैं ?

दादा : 9 वर्ष से लेकर 50 वर्ष तक की महिलाएँ / लड़कियों को जाने की अनुमति नहीं हैं।

पोता : उस नाम से कोई देवता का नाम तो कभी नहीं सुना।

दादा : ब्रह्माजी एक बार तप करते हुए एक असुर को यह वरदान दिये थे कि नारायणजी और शिवजी के शक्ति से जो पुत्र जन्म लेगा, वही एकमात्र असुर को मार पाएगा। पहली बार 41 दिन नंगे पैर में रहना पड़ेगा। सवेरे और शाम को स्नान करके आयाप्पाजी के मंदिर जाकर पूजा

करना पड़ेगा। अकेले सोना होगा। दाढ़ी, मूंछे काटना मना है। 41 दिन के बाद कुछ ब्राह्मण लोगों को खाना खिलाकर मंदिर से आयाप्पाजी के माला पुजारी के हाथ से पहनकर बहुत सारे मंदिरों के दर्शन करते हुए आयाप्पाजी के मंदिर में जाना पड़ता है।

पोता : बहुत रोचक है और आगे बताईये।

दादा : माला लेने के बाद आप अपने परिवार के जिन सदस्यों के उपर मन्नत रखते हैं, उतना नारियल में घी भरकर, साथ में चुड़ा, मुड़ी एक थैला में रखकर सिर के उपर रखना पड़ता है और गुरुजी की अनुमति बिना सिर के उपर से थैला नीचे रखना माना है।

दादा : साउथ इंडिया में बहुत से बड़े मंदिर हैं। जैसे उडुपी के कृष्ण मंदिर, मोकामिविका मंदिर, गुरुवायुर, पद्मनाभस्वामी, तिरुपति, रामेश्वरम के शिव मंदिर इत्यादि। सभी मंदिरों में मुफ्त में खाना मिलता है। मंदिर में जाने से पहले आदमी के शरीर के उपरी भाग में कपड़ा रखना मना है। इस तरह अनेक मंदिरों के दर्शन करने के बाद पम्पा नदी के किनारे पहुंचना पड़ता है। नहाने के बाद, गुरुजी के साथ पुजा करके हड़िमुड़ी (जिसमें नारियल और चुड़ा-मुड़ी रहता है) सिर के उपर लेकर आयाप्पाजी के दर्शन के लिए जाते थे। रात के समय चलना पड़ता था, क्योंकि पहाड़ बहुत ऊंचा था। दिन के समय चलने में डर लगता था। सड़क के दोनों तरफ ग्लूकोज का पानी, जड़ी बूटी वाला पानी बिकता था। लगभग 8 किमी चलने के बाद मंदिर आता था। एक नारियल तोड़कर मंदिर के अंदर जाना पड़ता था। वहाँ पर 18 सीडियाँ चढ़ना पड़ता था। सीडियों में सोन जड़ा हुआ है।

दादा : लोग कहते हैं कि विजय माल्या नाम के एक व्यक्ति ने यह सोना दान किया। मंदिर का शिखर सोना से ढका हुआ है। आयाप्पाजी के दर्शन के बाद दानपात्र में रुपया-पैसा डालने से सीधा धनलक्ष्मी बैंक में पहुँच जाता था। मैंने एक सौ रुपये दानपात्र में दल दिया, और पास में एक आदमी 500 रुपये नोट का एक गठरी (50,000) दानपात्र में डाल दिया। दर्शन के बाद गुरुजी सबको लेकर एक जगहपर बर बैठ गए और नारियल तोड़कर, नारियल के अंदर से घी निकालकर एक पात्र में डालते थे। अब गुरुजी ने वह पात्र लेकर आयाप्पाजी को नहाते के बाद पैर से बहता घी उसी पात्र में लेकर सबको थोड़ा – थोड़ा करके देते थे। 14 जनवरी के दिन दूरके पहार से एक ज्योति दिखाई देती हैं और औसमान में एक पक्षी उड़ता हआ दिखाई देता हैं। जो आदमी बारबहबाँ बार जाएगा वह एक नारियल पैड़ लेकर मंदिर को भेट देगा। मैने एक आदमी को देखा कि वह चार नारियल का पेड़ लेकर जा रहे थे।

पोताः उसके बाद आपकी बदली तो कोलकाता में हुई।

दादाः हाँ मेरी बदली अपना शहर कोलकाता में हुआ। इतनी गरमी, पसीना होना, इनक्लाब जिंदाबाद, जबरदस्त भीड़। आफिस में कोई भी एक टॉपिक मिलने से, सभी लोग अपना – अपना ज्ञान-विद्या जाहिर करना शुरु कर देते हैं और घन्टों-तक ऐसा चलता रहता हैं। हाँ एक

मजे की बात याद आ गयी। पांडेजी बोलकर एक आदमी आर्मी से सेवानिवृति के बाद ड्राफ्समैन के पद पर था। जो हर रोज रम पीता था ओर वह भी बिना पानी के। एक दिन ड्राफ्समैन टुल के बैठकर पी रहा था। किसी ने जाकर ओ.सी साहब को बोल दिया। पांडेजी पीने के बाद आइए। ऊपर जब देखा तो ओ.सी साहब सामने खड़ा था और उसके तरफ देखते हुए बोला खतम हो जाए तो मेरे चेम्बर में आइएगा। पांडेजी ओ.सी साहब के चेम्बर में चले गए। बाकी लोग सोचे कि अब पांडेजी की नौकरी गई। थोड़े देर के बाद पांडेजी सेक्सन में आये, आखों मे पानी था। सबलोग जाकर पूछा कि क्या हुआ? कुछ देर चुपचाप बैठने के बाद बोले कि ओ.सी साहब चेम्बर में मुझे बोला कि आप कया अपने पैसे से दारु खरीदा? मैने बोला हाँ। तब ओ.सी साहब ने बोला कि तब चोरों की तरह आप क्यों दारु पी रहा था। भविष्य में आफिस के अन्दर ऐसा मत कीजिएगा।

इस जीवन में मैं बहुत देश घूमा, नजदीक से तेलुगु, गढ़वाली, कन्नड़, मलयाली, तमिल, बिहारी इत्यदि को देखा।लेकिन बंगाली कोहिनूर के हीरा जैसा हैं। कई लोग बोलते हैं कि बंगाली लोग अत्यधिक भावुक, डरपोक, चतुर, रुपया- पैसा का कीमत नही पहचानता, अपने के साथ कलह करना, रंगबाज, अड्डाबाज और जीवन के सुनहरे पल रीजनीति करके खतम कर देता हैं। फिर भी इस जाति के अंदर एक बिजली की चमक हैं जिसके कारण ये बंगाली जाति दुनिया में अपना नाम बहुत ऊपर तक ले गया। कोई भी आन्दोलन में जी जान से लड़ जाना। फुटबल पागल, क्रिकेट पागल, इसके बाद "दुर्गा माई की जय", "फिर आना माँ अगले साल" । यह सब कहाँ मिलेगा। रक्तदान शिविर में रक्त देना, शवदेह के साथ जाकर क्रियाकर्म करना। उत्तम – सुचित्रा के सिनेमा, नोवेल जयी रबीन्द्रनाथ ठाकुर, अमर्त्यसेन, सत्यजीत राय इस जाति के गौरव हैं। इसके अलावा स्वाधीनता संग्राम के समय मरा हुआ दोस्तों के खून से रंगा हुआ बन्दूक लेकर लड़ाई करना। स्वामी विवेकनन्दजी का वह आवाज "ब्रदर्स एन्ड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका", नेताजी की वह आवाज "आप मुझे खून दीजिए मैं आपको आजादी दूंगा" । यह सब हम नही भूल पाएंगे।

(दादाजी भावुक होकर गाने लगे – धन ध्यान्ने पुष्पे भरा अमादेर एई बसुंघरा- ताहार माझे आछे देश एक सकल देशेर सेरा ....)

--श्री देबेश राय
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हिन्दी समारोह – 2016

हिन्दी समारोह – 2016

हिन्दी समारोह – 2016

हिन्दी समारोह – 2016

भारत-बांग्लादेश सीमा सर्वेक्षण कार्य

भारत-बांग्लादेश सीमा सर्वेक्षण कार्य

भारत-बांग्लादेश सीमा सर्वेक्षण कार्य

भारत-बांग्लादेश सीमा सर्वेक्षण कार्य

महान त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण प्रारम्भ होने के 200 वर्ष पूर्ण होने पर जारी डाक-टिकट

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के 250 वर्ष पूरे होने के सुअवसर पर जारी डाक-टिकट